केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 237 बुधवार 26 मार्च 2025 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

करंट से एक की मौत, एक घायल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सोनहा थाना क्षेत्र के मुड़िला अव्वल गांव में बीती रात में 11 हजार वोल्टेज वाली बिजली लाइन की चपेट में आने से दो व्यक्ति घायल हो गए जिसमें इलाज के लिए ले जाने पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रुधौली में डॉक्टरों ने एक व्यक्ति को मृत्यु घोषित कर दिया दूसरे व्यक्ति को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनहा थाना क्षेत्र के मुडिलाअव्वल गांव में गोरखनाथ की बेटी की सगाई का कार्यक्रम था जिसमे टेंट लगाया गया था। सोमवार को करीब 7 बजे कार्यक्रम खत्म होने के बाद टेंट निकालते समय गांव के 40 वर्षीय सतीश चंद्र श्रीवास्तव टेंट निकालने में मदद कर रहे थे उसी दौरान ऊपर से जा रही हाई बोल्टेज लाइन में लोहे की पाइप सट गई इस घटना में सतीश और गोरखनाथ घायल हो गए । परिजनों द्वारा घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टरों ने सतीश को मृत्यु घोषित कर दिया।

जुर्माना न भरने पर कार्रवाई, डॉक्टर की 86 वर्गमीटर जमीन की कुर्की

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बेलवाडाड़ गांव में प्रशासन ने मंगलवार को एक बड़ी कार्रवाई की। कोर्ट द्वारा लगाए गए 50 हजार रुपये के जुर्माने को न भरने पर डॉ. प्रेम नारायण की 86 वर्गमीटर जमीन को कब्जे में ले लिया गया। नायब तहसीलदार स्वाती सिंह के अनुसार, डॉ. प्रेम नारायण ने न्यायालय में एक वाद दाखिल किया था। न्यायालय ने इस वाद को खारिज कर दिया। इसके बाद डॉक्टर ने फास्ट ट्रैक कोर्ट द्वितीय में निगरानी दाखिल की।

18 जनवरी 2025 को कोर्ट ने दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद निगरानी खारिज कर दी। साथ ही डॉ. प्रेम नारायण पर 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाया। उन्हें 10 दिन के भीतर यह राशि जमा करनी थी।

जुर्माना न भरने पर कोर्ट ने जिलाधिकारी को राजस्व वसूली का आदेश दिया। एसडीएम बस्ती सदर ने डॉक्टर को नोटिस जारी किया, लेकिन वे राशि जमा नहीं कर पाए। प्रशासन ने उनके बैंक खातों की जानकारी जुटाने का प्रयास किया। खाते का विवरण न मिलने पर प्रशासन ने बेलवाडाड़ गांव के गाटा संख्या 490 में स्थित उनकी जमीन को कब्जे में ले लिया। अब जब तक वे जुर्माना नहीं भरेंगे, इस जमीन की फसल नहीं काट सकेंगे।

विकास प्राधिकरण के खिलाफ प्रदर्शन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । हरैया तहसील के रिधौरा, कंचनपुर, माचा और लालपुर गांव के किसानों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर अयोध्या विकास प्राधिकरण के खिलाफ प्रदर्शन किया। किसानों ने जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

किसानों का कहना है कि अयोध्या विकास प्राधिकरण उनकी जमीनें लेना चाहता है। वे अपनी जमीनें किसी भी कीमत पर देने को तैयार नहीं हैं। ग्रामीणों ने बताया कि वे सभी छोटे काश्तकार हैं और खेती ही उनकी आजीविका का एकमात्र साधन है।किसानों ने चेतावनी दी कि अगर उनकी विकास प्राधिकरण को दी गईं तो वे भूखमरी के कगार पर पहुंच जाएंगे।

पहली बार 60 हजार पुलिसकर्मियों की एक साथ होगी ट्रेनिंग, आठ सालों में 10 गुना बढ़ी क्षमता

संवाददाता–गोरखपुर।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को गोरखपुर पहुंचे। यहां उन्होंने कहा कि सुरक्षा का बेहतर माहौल देने के लिए बड़े सुधार किए गए। एक तरफ यूपी में सात पुलिस कमिश्नरेट बनाए गए। वहीं जिला स्तर पर भी बेहतर ढांचा खड़ा किया गया। आठ साल में 2.12 लाख से ज्यादा पुलिस कार्मिकों की भर्ती की गई। इनमें से 1.56 लाख पुलिसकर्मी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं जबकि 60 हजार से अधिक की भर्ती अभी संपन्न हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2017 में यूपी में मात्र 6000 पुलिसकर्मियों की ट्रेनिंग हो सकती थी। लेकिन अब जिन 60 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों की भर्ती हुई है, सबकी ट्रेनिंग एक साथ होगी।

प्रदेश सरकार के आठ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मंगलवार को गोरखपुर में आयोजित विकास उत्सव के शुभारंभ के बाद सर्किट हाउस में मीडियाकर्मियों से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि आठ वर्षों में प्रदेश सरकार ने सुरक्षा का बेहतर माहौल दिया तो उसका परिणाम रहा कि उत्तर प्रदेश में हरेक व्यक्ति ने अपने आप को सुरक्षित महसूस किया है। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने वन डिस्ट्रिक्ट, वन माफिया पैदा किया जबकि आज सरकार ने वन डिस्ट्रिक्ट, वन मेडिकल कॉलेज दिया है, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट दिया है। नए रोजगार के सृजन किए हैं। एमएसएमई को पुनर्जीवित किया है। इन सबसे उत्तर प्रदेश में निवेश का नया युग आया है।

सीएम ने कहा कि पीएसी की कंपनियां जो दंगाइयों के लिए काल होती थीं, उन्हें पिछली सरकार ने बंद कर दिया था। हमने सभी कंपनियों को बहाल किया है। उनमें भी सुधार किया गया। एसएसएफ और एसडीआरएफ की कम्पनियां गठित की गईं। मुख्यमंत्री ने कहा कि कहीं आग लगने पर पहली बार हाइड्रोलिक टेंडर की व्यवस्था उत्तर प्रदेश के फायर सर्विस में की गई है। फॉरेंसिक लैब के साथ फॉरेंसिक इंस्टीट्यूट भी उत्तर प्रदेश में चालू हो गया है। उन्होंने कहा कि पहले पीआरवी 112 की रिस्पांस टाइम 25 मिनट से ज्यादा थी, आज मात्र 7 मिनट में पीआरवी पहुंच रही है। ऐसे ही 108 एंबुलेंस सेवा का रिस्पांस टाइम भी 25 मिनट से ज्यादा हुआ करता था, आज 7 से 12 मिनट के अंदर वह अपनी सुविधा दे रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे प्रदेश के अंदर जोन स्तर पर एडीजी और रेंज स्तर पर आईजी रैंक के अफसर की तैनाती की गई। उन्होंने कहा कि पुलिस कार्मिकों के लिए पहले कोई व्यवस्था नहीं होती थी। अब हर जिले में जो हाईराइज बिल्डिंग होगी वह पुलिसकर्मियों के लिए होगी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में परिवर्तन की जो प्रक्रिया प्रारंभ हुई यह हमारे संकल्प का हिस्सा था। उस संकल्प के तहत हम लोगों ने, भाजपा ने 2017 में जनता जनार्दन के सामने वादा किया था कि सबको सुरक्षा देंगे, सबको सम्मान देंगे। योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के हर गांव, हर गरीब, हर किसान, हर नौजवान, हर जरूरतमंद को उपलब्ध करवाएंगे। सरकार ने इन सभी वादों को पूरा किया है।

योगी ने कहा कि देश के अंदर सर्वाधिक एक्सप्रेस–वे के मामले में यूपी नंबर एक पर है। इंटरस्टेट कनेक्टिविटी हमारी बेहतर हुई है। प्रदेश में जिला मुख्यालयों को फोरलेन, तहसील मुख्यालयों को फोरलेन के कनेक्टिविटी के साथ जोड़ने की कार्यवाही को आगे बढ़ाया गया है। साथ ही विकासखंड मुख्यालय को टूलेन और फोरलेन की कनेक्टिविटी के साथ जोड़ने के कार्यक्रमों को आगे बढ़ा रहे हैं।

मेडिकल कैंप में 400 लोगों को मिला मुफ्त इलाज

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शेखपुरा पंचायत भवन में ट्री इनिशिएटिव्स सोसाइटी की ओर से एक बड़े निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। महादेवा विधानसभा के विधायक दूधराम ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने ग्रामीणों को स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की सलाह दी। शिविर में चार अलग–अलग चिकित्सा पद्धतियों की टीमें मौजूद थीं। एलोपैथी में डॉ. अमरेश प्रताप सिंह और डॉ. देवांश चौधरी ने सेवाएं दीं। होम्योपैथी में डॉ. विनोद मिश्र और आयुर्वेद में डॉ. संजय वर्मा ने मरीजों का इलाज किया। फार्मासिस्ट अमित मणि और योग विशेषज्ञ सूर्य प्रताप सिंह ने स्वास्थ्य जागरूकता का प्रसार किया।

ट्री इनिशिएटिव सोसाइटी के अध्यक्ष प्रभाकर ने बताया कि यह शिविर सिर्फ इलाज के लिए नहीं था।

इसका मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी था। उन्होंने आगे भी ऐसे शिविर लगाने की योजना बताई।कार्यक्रम की सफलता में सोसाइटी के कई सदस्यों का योगदान रहा।

राम कृष्ण, बालकृष्ण, जय प्रकाश, दिलीप वर्मा, विनोद पटेल, अंजू पटेल और चांदनी कुमारी ने सक्रिय भूमिका निभाई। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अमरनाथ, मनोज कुमार, प्रेम प्रकाश और बीडीसी अशफाक अहमद ने भी सहयोग किया। शिविर में करीब 400 मरीजों को मुफ्त दवाएं दी गईं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं से संतुष्ट नजर आए। सोसाइटी ने सभी डॉक्टरों, सहयोगी संस्थाओं और ग्रामीणों का आभार जताया।

योगी सरकार के 8 वर्ष पूर्ण होने पर त्रिदिवसीय मेला शुरूः प्रभारी मंत्री ने गिनाई उपलब्धियां

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उत्तर प्रदेश सरकार के सेवा, सुरक्षा एवं सुशासन के नीति पर आठ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यू.पी. भारत का ग्रोथ इंजन की थीम आधारित जनपद मुख्यालय पं. दीनदयाल अटल बिहारी बाजपेयी प्रेक्षागृह में 25 मार्च को त्रिदिवसीय दिव्य व भव्य मेले का शुभारम्भ कैबिनेट मंत्री प्राविधिक शिक्षा एवं उपभोक्ता मामले/जनपद के प्रभारी मंत्री आशीष पटेल ने विधायक हर्रैया अजय सिंह, जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र, जिला पंचायत अध्यक्ष संजय चौधरी, सहित जनप्रतिनिधियों के साथ किया। जिसमें केन्द्र सरकार के 10 वर्ष तथा प्रदेश सरकार के 08 वर्ष की उपलब्धियों तथा जनहित क्रियान्वित जनकल्याणकारी योजनाओं/परियोजनाओं कार्यो पर आधारित विकास प्रदर्शनी, विकास पुस्तिका का विमोचन, थीम आधारित विचारगोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आठ वर्ष उपलब्धि विशेष एवं महाकुम्भ प्रयागराज 2025 लघु फिल्म का प्रदर्शन, विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं में लाभार्थियों को आच्छादित किया गया।

इस अवसर पर उन्होने कहा कि यहॉ पर उपस्थित माता, बहनों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूॅ। उन्होने कहा कि अगले वित्तीय वर्ष से उत्तर प्रदेश सरकार बच्चियों को स्कूटी देने की योजना लागू करेंगी। उन्होने यह भी कहा कि उद्यमी योजना के अन्तर्गत पात्र व्यक्तियों को 05 लाख रूपये के ऋृण बिना ब्याज के दिया जा रहा है। उन्होने कहा कि पहले लोगों को खेती बेचकर इलाज कराना पड़ता था, आयुष्मान कार्ड योजनान्तर्गत 05 लाख रूपये तक का मुफ्त इलाज दिया जा रहा है। उन्होने कहा कि सरकार योजनाओं को बनाती है, उसके लिए धन भी भेजती है। अधिकारियों तथा जनप्रतिनिधियों का दायित्व है कि लाभपरक योजना का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति को अवश्य मिलें।

इस अवसर पर उन्होने इन्वेसमेण्ट यू.पी. के अन्तर्गत मनोज कसौधन को 41 करोड़ का लोन एथेनाल निर्माण के लिए दिया। सीएम युवा उद्यमी अन्तर्गत श्रीमती रीना श्रीवास्तव को 05 लाख का ऋृण दिया तथा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के अन्तर्गत दो व्यक्तियों को टूलकिट दिया एवं 05 लोगो को टेबलेट वितरण किया गया। ग्राम्य विकास गौवंश संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य में बीडीओ परसरामपुर को प्रशस्ति पत्र दिया गया। 05 व्यक्तियों को ट्राईसाइकिल वितरित किया गया। कस्टम हायरिंग के अन्तर्गत राकेश बहादुर सिंह को ट्रैक्टर की चॉभी दी गयी। इस अवसर पर उन्होने प्रयागराज से आये महाकुम्भ के पावन जल को जनसामान्य में वितरित किया।

जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने कहा कि योगी जी के नेतृत्व में सुशासन दिवस मनाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में योगी जी की सरकार बनी है, तबसे निरन्तर विकास हो रहा है। होली व जुमा का त्यौहार एक साथ था, दोनों त्यौहारों को अच्छे तरीके से मनाया गया। उन्होने कहा कि सरकार के नेतृत्व में पुलिस भर्ती पारदर्शी तरीके से किया गया है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनान्तर्गत पात्र लाभार्थियों को लाभ दिया जा रहा, यह एक पूनीत कार्य है। विधायक अजय सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार के आठ वर्ष पूर्ण होने सेवा, सुरक्षा व सुशासन पर कार्यक्रम प्रदेश के सभी जनपदों में आयोजित हो रहा है। इस थीम से लोगो में जागरूकता आयेंगी। उ0प्र0 सरकार के नेतृत्व में सरकारी नौकरी लोगो को पारदर्शी तरीके से मिल रही है। गन्ना मूल्य भुगतान भी लोगों का कर दिया गया है। उत्तर प्रदेश के हर क्षेत्र में विकास हो रहा है।

जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने उपस्थित लोगों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि हम सभी को अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करना चाहिए। इस अवसर पर मंत्री श्री पटेल ने सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा लगी प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। जिसमें प्रदेश सरकार के सेवा, सुरक्षा एवं सुशासन के आठ वर्ष पूर्ण पर आधारित सबका साथ, सबका विकास चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

उ0प्र0 नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण, उ0प्र0 कौशल विकास मिशन, व्यवसायिक शिक्षा, दुग्ध विकास, मत्स्य, विद्युत, स्वास्थ्य, गन्ना, रेशम, वन, पशुपालन, उद्यान, कृषि, बाल विकास एवं पुष्टाहार, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, ग्राम्य विकास स्वतः रोजगार, जिला प्रोबेशन, समाज कलयाण, पंचायती राज, यातायात पुलिस, पुलिस विभाग, अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड लो.नि., बेसिक शिक्षा, जिला पर्यटन एवं सांस्कृतिक, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, खाद्य एवं रसद, जिला नगरीय विकास अभिकरण विभागों के लगे प्रदर्शनी/स्टाल का मा. मंत्री ने अवलोकन किया।

पुलिस अधीक्षक अभिनन्नद, मुख्य विकास अधिकारी सार्थक अग्रवाल, एडीएम प्रतिपाल सिंह चौहान, पीडी राजेश कुमार, डीडीओ अजीत सिंह, भूमि संरक्षण अधिकारी राजमंगल चौधरी, डीपीआरओ रतन कुमार, उपायुक्त उद्योग हरेन्द्र, बीएसए अनूप तिवारी, सेवायोजन अधिकारी अवधेन्द्र प्रताप वर्मा, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष राजेन्द्रनाथ तिवारी, नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि अंकुर वर्मा, ब्लाक प्रमुख यशकान्त सिंह, झिनकान चौधरी, राजमणि पटेल, संजय सिंह पगार, रामनयन पटेल सहित विभागीय अधिकारी व जनप्रतिनधिगण उपस्थित रहें।

कुछ लोग मुझे आतंकवादी घोषित करने में लगे हैं –प्रधानपति

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भानपुर तहसील के रामनगर कठौतिया गांव में इन दिनों एक मस्जिद और मदरसे को लेकर विवाद गहरा गया है। हिंदूवादी संगठनों का आरोप है कि यहां अवैध तरीके से मस्जिद का निर्माण किया जा रहा था, जबकि गांव के कुछ मुस्लिम निवासियों का कहना है कि यह मस्जिद नहीं, बल्कि एक मदरसा है, जहां बच्चे पढ़ाई करते थे। उनका दावा है कि इमारत जर्जर हो गई थी, इसलिए केवल मरम्मत कार्य किया जा रहा था। मामले को लेकर हिंदूवादी संगठनों के पदाधिकारियों ने ग्राम प्रधान आसिमा बेगम, उनके पति मोहम्मद रईस और अन्य लोगों पर गंभीर आरोप लगाए। इतना ही नहीं, उन पर आतंकी गतिविधियों में शामिल होने तक के आरोप लगाए गए। विवाद बढ़ता देख प्रशासन ने तत्काल निर्माण कार्य पर रोक लगा दी और हल्का लेखपाल की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया।

मामले को लेकर जब प्रधानपति मोहम्मद रईस से बातचीत की गई, तो उन्होंने कहा, ष्मैं और मेरा परिवार सभी धर्मों का सम्मान करता है, लेकिन कुछ लोग मुझे और मेरे परिवार को आतंकवादी घोषित करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि फरवरी में उन्होंने गांव में यज्ञ कराया था, जिसमें वे अध्यक्ष थे। उन्होंने कहाकि इस तरह के झूठे आरोपों से मुझे और मेरे परिवार को गहरा आघात पहुंचा है। मेरी पत्नी से पहले 15 साल तक प्रधान थे केदारनाथ । रईस ने बताया कि उनकी पत्नी आसिमा बेगम से पहले 15 वर्षों तक केदारनाथ गांव के प्रधान रहे, लेकिन तब किसी ने कोई आपत्ति नहीं जताई। उन्होंने कहा, षजिसे मस्जिद बताकर विवाद खड़ा किया गया है, वह वास्तव में एक 80 साल पुराना मदरसा है। उन्होंने उन आरोपों को झूठा और निराधार बताया। रईस ने बताया कि वे गांव के हिंदू भाइयों के साथ हर साल होली खेलते हैं, जिसकी तस्वीरें भी उन्होंने साझा कीं, जिनमें वे रंग में सराबोर नजर आ रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा, ष्मेरी मां आज भी गांव के मंदिर में झाड़ू लगाती हैं। मुझे प्रशासन से इंसाफ चाहिए।

रूधौली क्षेत्र पंचायत की बैठक में कई विकास प्रस्तावः कई विभागों के अधिकारियों की अनुपस्थिति पर निंदा प्रस्ताव का निर्णय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । जिले के रुधौली विकासखंड सभागार में क्षेत्र पंचायत सदस्यों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र पंचायत सदस्य और ग्राम प्रधान उपस्थित रहे। क्षेत्र पंचायत की बैठक में बीस करोड़ रुपए का लेबर बजट पारित हुआ। जबकि मनरेगा

गन्ना विकास समिति वाल्टरगंज के अध्यक्ष एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य पुष्करादित्य सिंह मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने कई विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों की अनुपस्थिति पर कड़ी नाराजगी जताई। इस संबंध में निंदा प्रस्ताव पारित करने का निर्णय लिया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रमुख अनूप कुमार चौधरी ने की।

खंड विकास अधिकारी योगेन्द्र राम त्रिपाठी ने बताया कि प्रदेश सरकार के आठ वर्ष पूर्ण होने पर सुरक्षा और सुशासन के तहत कार्यक्रम चल रहा है। ब्लॉक के विकास के लिए क्षेत्र पंचायत सदस्यों से प्रस्ताव लिए गए। तथा प्रधानों द्वारा पंचायत भवन पर सचिवों के न बैठने की शिकायत पर बीडीओ ने सचिवों को पंचायत भवन पर बैठने का निर्देश दिया है।

बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अपनी योजनाओं की जानकारी दी। इनमें बीईओ अशोक कुमार गौतम, पशुचिकित्साधिकारी डॉ. रितेश कुमार गुप्ता, डॉ. प्रवीण कुमार, विद्युत विभाग के शहनाज आलम और सीडीपीओ साधना शामिल रही। विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों का मुख्य अतिथि ने निरीक्षण किया।

कार्यक्रम में प्रधान संघ के अध्यक्ष आशुतोष मिश्रा उर्फ सोनू मिश्रा सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित रहे। इनमें हाजी जैनुल्लाह, राजकुमार पांडे, आलोक कुमार चौधरी,मायाराम चौधरी, मो रफीक, जितेंद्र सिंह,राकेश पांडे,चंद्रभान विश्वकर्मा,सुहेल अहमद,चंद्रमणि दुबे,मो सिद्दीकी, धर्मेंद्र चौधरी, राजेश चौधरी, प्रमोद चौधरी, अभिषेक सिंह,अब्दुल रज्जाक,तुलसीराम,और अन्य प्रधान तथा बीडीसी सदस्य शामिल थे।

भाजपा सरकार में ही समग्र विकास संभव- अनिल दुबे

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कुदरहा (बस्ती)। ब्लाक सभागार में उत्तर प्रदेश सरकार के सेवा, सुरक्षा व सुशासन की नीति के आठ वर्ष पूर्ण होने पर ब्लाक सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें तमाम विभागों द्वारा स्टाल लगाया गया और लोगों को योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे व खण्ड विकास अधिकारी आलोक कुमार पंकज ने किया। संबोधित करते हुए ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे ने कहा कि प्रदेश सरकार योजनाओं का संचालन कर सीधे लाभार्थियों को सुविधा मुहैया करा रही है। बिना भेद भाव के सभी का विकास हो रहा है। खंड विकास अधिकारी आलोक कुमार पंकज ने सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए बताया कि प्रत्येक कर्मचारी ग्राम पंचायत में जा कर योजनाओं का संचालन कराएं। सभागार में लगे स्टालों का आतिथि ने निरीक्षण किया। स्वयं सहायता समूह द्वारा मोमबत्ती, दोना पत्तल व सर्फ बनाने वाली महिलाओ का उत्साहवर्धन किया। आंगनवाड़ी विभाग द्वारा गोद भराई कार्यक्रम भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन एडीओ पंचायत सुभाष चंद्र ने किया

कार्यक्रम में कुलदीप यादव, पंकज पांडेय, दीपक श्रीवास्तव, चंद्रभान चौरसिया, ओम प्रकाश पांडे, देवेंद्र यादव, ओमकार चौधरी, रामप्रकाश यादव, डा फजील खान, समजीत, ललन, अनिल तिवारी, क्षितज वर्मा, घनश्याम यादव, बालेंद्र कुमार, मनोज, शिवकुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

योगी सरकार में किसान खुशहाल- दयाराम चौधरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सेवा सुरक्षा एवं सुशासन , केंद्र सरकार के 10 वर्ष एवं प्रदेश सरकार के 8 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नगर पंचायत गनेशपुर के कार्यालय पर प्रदर्शनीध मेला का हुआ आयोजन कार्यक्रम में पूर्व विधायक, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि दयाराम चौधरी ने केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार की जन कल्याण योजनाओं की विस्तार से चर्चा किया।

दयाराम चौधरी ने कहा राज्य में 8 साल के दौरान आए व्यापक परिवर्तन का जिक्र करते हुए अन्नदाता किसानों से लेकर महिलाओं तक के लिए सरकार की तरफ से किए गए कार्य का उल्लेख किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था से लेकर अपराधियों के खिलाफ अभियान तक का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने विकास कार्य किया है।

जीडीपी में उछाल और कानून व्यवस्था के राज का जिक्र करते हुए दयाराम चौधरी ने कहा कि हर क्षेत्र में यूपी आगे बढ़ा है। उन्होंने 2017 से पहले प्रदेश में कानून व्यवस्था की बदहाली के बारे में बताते हुए कहा कि बेटी से लेकर व्यापारी तक पीड़ित रहते थे। दंगे और हिंसा होती थी। अपराधियों का बोलबाला था। पहले यहां पहचान का संकट था। आज किसान खुशहाल है और आमदनी बढ़ी है।

> *"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स*

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 26 मार्च 2025 बुधवार

सम्पादकीय

'ग्रोक' पर रोक आसान नहीं

कुछ सालों तक एलेक्सा से खेलने के बाद अब भारतीयों को ग्रोक नाम का नया विदेशी खिलौना मिल गया है। 'ट्विटर' जिसे अब 'एक्स' कहते हैं, के मालिक एलन मस्क की कम्पनी ने ए.आई. के इस चौट—बॉट को बनाया है। गूगल का जैमिनी, ओपन ए.आई. का चौट—जी.पी.टी., फेसबुक का मेटा आई और चीन का डीप—सीक भारत के बाजार में कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं। उस लिहाज से फ रवरी 2025 में लांच ग्रोक के तीसरे वर्जन की लोकप्रियता और सफलता अप्रत्याशित है। पहले इसका इस्तेमाल भुगतान से प्रीमियम ग्राहक ही कर सकते थे। लेकिन प्रोडक्ट्स की मार्कीटिंग में उस्ताद मस्क ने ग्रोक को आम यूजर्स के लिए खोलकर एक महीने में ही खूब चध्चत बना दिया है। भारत में 'एक्स' के 3 करोड़ से ज्यादा यूजर्स के साथ अन्य लोग वैबसाइट के माध्यम से इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसकी लोकप्रियता के 3 बड़े कारण हैं, पहला, यह वास्तविक समय के अनुसार नवीनतम जानकारी और जवाब देता है। दूसरा, सुपर कम्प्यूटर के माध्यम से तीसरे वर्जन की स्पीड 10 गुना बढने से इसके त्वरित जवाब लोगों को बहुत पसंद आ रहे हैं। तीसरा, दूसरे ए.आई. प्लेटफार्म जिन बातों का जवाब देने से बचते हैं, उनका व्यंग्यपूर्ण और मजाकिया शैली में ग्रोक जवाब देता है। लेकिन कविता, कहानी या लेख लिखने के लिए चैट जी.पी.टी. और तकनीकी, कोडिंग और गणित के सवालों के जवाब के लिए डीप सीक को अभी भी बेहतर चौटबॉट प्लेटफार्म माना जाता है।

सरकार समर्थक और विरोधी खेमे में ध्रुवीकरण वाले भारतीय मीडिया में तथ्य, तर्क, विवेक और संतुलन के अभाव की वजह से ग्रोक को कई लोग जागरूक मीडिया का विकल्प मानने लगे हैं। उनके अनुसार ग्रोक से कड़वे सच उजागर हो रहे हैं। लेकिन इसे सरकार का आलोचक या लोकतंत्र का रक्षक मानने की बजाय इस हकीकत को समझने की जरूरत है कि ग्रोक दुनिया के सबसे बड़े कारोबारी का मार्कीटिंग टूल है। कड़वी हकीकत यह भी है कि ग्रोक की कठपुतली के ऑप्रेटिंग सिस्टम और पूर्वाग्रहों को अमरीका में बैठे कारोबारी मिनटों में बदल सकते हैं। इसलिए इसकी सफ लता के पीछे के बिजनैस मॉडल को समझने की जरूरत है। दरअसल ग्रोक इंटरनैट में उपलब्ध अपडेटेट रियल टाइम जानकारी और डाटा के अनुसार सटीक जवाब देता है। ग्रोक यूजर्स के 'एक्स' की पोस्ट, लोगों की प्रोफाइल और लिंक का तुरंत विश्लेषण कर सकता है। प्रोसैसिंग के हर चरण में डीप सर्च जैसे टूल्स की मदद से रीजनिंग के इस्तेमाल से यह अपनी गलतियों को सुधार कर जवाब को बेहतर बनाता है। ग्रोक की भाषा अनफिल्टर्ड है इसलिए यह गुस्से, गाली या मजाक वाले कई सवालों का स्लैंग और छिछोरे लहजे में जवाब देता है। 'एक्स' के यूजर्स ग्रोक के इस्तेमाल से सोशल मीडिया में सीधी बहस कर सकते हैं, इसलिए यह बहुत तेजी से भारत में लोकप्रिय हो रहा है।

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में ट्विटर के साथ कई विवाद हुए थे। ट्विटर के सी.ई.ओ. के खिलाफ पुलिस में एफ..आई.आर. भी दर्ज हो गई थी। आई.टी. मंत्री ने ट्विटर के सेफ हार्बर सुरक्षा कवच को हटाने की धमकी भी दी थी। लेकिन उसके बाद ट्विटर का स्वामित्व मस्क के पास आ गया जिन्होंने इसका नामकरण 'एक्स' कर दिया। गूगल, एमाजॉन और मेटा जैसी कम्पनियां पुलिस और सुरक्षा एजैंसियों को सहयोग प्लेटफॉर्म के माध्यम से जानकारी देती हैं। लेकिन 'एक्स' सरकार की एजैंसियों के साथ सहयोग करने से इंकार कर रही है। टैक्स कम्पनी ने कनार्टक हाईकोर्ट में भारत सरकार के सहयोग प्लेटफार्म और आई.टी. कानून की धारा—79 (3)(बी)को चुनौती देकर आक्रामक रवैया अपनाया है। भारत में रोकना मुश्किलरू आई.टी. मंत्री अश्विनी वैष्णव ने संसद में बताया है कि अपशब्दों का इस्तेमाल करने के लिए ग्रोक की कम्पनी को सरकार ने नोटिस जारी किया है। आई.टी. नियमों के अनुसार ग्रोक की कम्पनी को भारत में इंटरमीडियरी का कानूनी दर्जा मिला है। उसके अनुसार उसे शिकायत अधिकारी की नियुक्ति करने के साथ भारत के कानून का पालन करना जरूरी है। भारत या फि र अमरीका में, ग्रोक के लिए सरकार ने किसे नोटिस जारी किया है?

ऑनलाइन पोर्नोग्राफी, सट्टेबाजी और ओ.टी.टी. के हिंसक कंटैंट को रोकने की बजाय सरकार ग्रोक के मनमौजीपन पर लगाम कसने का दिखावा कर रही है। लेकिन वर्तमान में कानूनी सिस्टम के तहत व्यापारिक माहौल में ग्रोक को भारत में ब्लॉक करना मुश्किल है। मस्क के सैटेलाइट इंटरनैट के भारत में कारोबार के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी अनेक आपत्तियां जाहिर की थीं। अब लाइसैंस मिले बगैर एयरटेल और जियो के कंधे पर चढ़कर मस्क की स्पेस एक्स कम्पनी भारत के कारोबार में प्रवेश कर रही है। टैरिफ वार के नए युग में ग्रोक जैसे विदेशी खिलौनों के कारोबार से भारत को बड़े पैमाने पर आमदनी हो सकती है। ग्रोक की भाषा यदि आपत्तिजनक है तो उसके साथ पॉर्नोग्राफी,एडल्ट कॉमेडी और ओ.टी.टी. के ड्क्षहसक और अश्लील कंटैंट के खिलाफ भी भारत सरकार को ठोस कार्रवाई करनी होगा।

योगी सरकार के 8 वर्ष उपलब्धियां और चुनौतियां

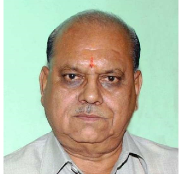

—अजय कुमार—

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे कर लिये हैं,जबकि कुल मिलाकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपना आठ साल पूरा कर चुके हैं। यूपी में सबसे अधिक समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का रिकार्ड भी योगी के नाम हो गया है। करीब 24 करोड़ आबादी को यदि योगी से पूर्व की सरकारों के तौर तरीकों की याद होगी तो वह जानते होंगे कि आठ साल पहले प्रदेश का क्या हाल था। यूपी की गणना बीमारू राज्य के रूप में होती थी। साम्प्रदायिक हिंसा,संगठित अपराध,दबंगई के बल पर जमीन पर कब्जा अखिलेश सरकार की पहचान थी। आतंकवादियों के मुकदमें वापस लिये जाते थे ।तुष्टिकरण समाजवादी सरकार की पहचान बन गई थी। दंगा पीड़ितों को उनका धर्म देखकर मुआवजा बांटने का कारनामा भी अखिलेश सरकार द्वारा किया गया था। सपा के नेता थानों तक में गुंडागर्दी करने से घबराते नहीं थे। आजम खान जैसे समाजवादी नेताओं की बदजुबानी के किस्से आम थे ।हिन्दू देवी देवताओं का अपमान समाजवादी सरकार की आदत बन गई थी। हाल यह है कि आठ साल सत्ता से बाहर रहने के बाद भी अखिलेश की राजनीति नहीं बदली है। विकास के नाम पर अखिलेश एक्सप्रेस वे और लखनऊ में मेट्रो के अलावा कुछ नहीं गिना पाते थे।

एक वह दौर था जब प्रदेश की जनता त्राहिमाम कर रही थी तो अब फाइलों में विकास नहीं उलझता है,बल्कि जमीन पर फलफूल रहा है ।अपराधी ठोके जा रहे हैं। भूमाफियाओं से कब्जाई जमीन वापस ली जा रही है। संगठित अपराध करने वालों को चुन चुनकर मिटाया जा रहा है। मगर पिछले आठ वर्षों में उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने राज्य के प्रति धारणा बदलने में सफलता प्राप्त की है। कभी बीमारू राज्य कहा जाने वाला उत्तर प्रदेश आज व्यवसाय एवं निवेश का सर्वश्रेष्ठ ठिकाना बनकर देश और दुनिया में पहचाना जा रहा है। उत्तर प्रदेश आज 'ग्रोथ गियर' है। हमें विरासत में अराजकता, अव्यवस्था और अपराध के अंधकार में डूबा हुआ प्रदेश मिला था।ऐसे राज्य को सुरक्षित परिवेश, मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर, सुगम कनेक्टिविटी और उद्यम अनुकूल नीतियों द्वारा निवेशकों का ड्रीम डेस्टिनेशन बनाने में हम लोग सफल रहे। विगत आठ वर्षों में प्रदेश को प्राप्त हुए 45 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव इसकी पुष्टि करते हैं। इनमें से 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्तावों को धरातल पर उतारा जा चुका है। इनके माध्यम से 60 लाख से अधिक युवाओं को नौकरी तथा अन्य लाखों लोगों हेतु रोजगार का सृजन हुआ है। स्थापित सत्य है कि सुरक्षा के सुपथ पर ही विकास कुलांचे भरता है और सुगम कनेक्टिविटी उसे तीव्रता प्रदान करती है। 'नया उत्तर प्रदेश' उसका जीवंत उदाहरण है।

महान चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा था कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का विकास ही अंत्योदय है। प्रधानमंत्री मोदी के यशस्वी मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार की हर योजना में यह भाव श्वास लेता है। यही कारण है कि बीते आठ वर्षों में प्रदेश सरकार ने छह करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने में सफलता प्राप्त की है। प्रदेश के 15 करोड़ निर्धनों को प्रतिमाह निःशुल्क अनाज, 1.86 करोड़ से अधिक परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन, 2.86 करोड़ से अधिक किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत 5.21 करोड़ लाभार्थियों को पांच लाख रुपये तक का चिकित्सा सुरक्षा कवच, 56.50 लाख से अधिक परिवारों को निःशुल्क आवास जैसे अनेक कल्याणकारी उपहारों ने प्रदेश के करोड़ों नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाया है। सभी को आवास के संकल्प की सिद्धि के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना एवं मुख्यमंत्री आवास योजना के हर उस लाभार्थी को आवासीय पट्टा अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराया गया है, जिनके पास भूमि नहीं थी। ऐसा करने वाला उत्तर प्रदेश देश का प्रथम राज्य है। यही तो है अंत्योदय।

आजादी से लेकर 2017 तक प्रदेश में 12 मेडिकल कालेज थे। आज राज्य में 44 राजकीय मेडिकल कालेज और 36 निजी मेडिकल कालेजों सहित 80 मेडिकल कालेज संचालित हैं। गोरखपुर और रायबरेली में एम्स का संचालन आरंभ हो गया है। 'एक जनपद—एक मेडिकल कालेज' की संकल्पना उत्तर प्रदेश में साकार हो रही है। प्रदेश में 122 चीनी मिलें क्रियाशील हैं। मार्च, 2017 से अब तक तीन नई चीनी मिलों की स्थापना हुई है। छह चीनी मिलों का पुनर्संचालन तथा 38 चीनी मिलों का क्षमता विस्तार हुआ है, जिससे लगभग 1.25 लाख लोगों को प्रत्यक्षध्अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हुआ है। आठ वर्षों में 46.50 लाख गन्ना किसानों को 2,80,223 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा चुका है।

मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना, पी.एम. स्वनिधि योजना जैसी अनेक कल्याणकारी योजनाएं मातृशक्ति के जीवन में सकारात्मकता का सवेरा लेकर आई हैं। ग्रामीण क्षेत्र की 95 लाख से अधिक महिलाओं को ग्रामीण आजीविका मिशन से जोड़ने के साथ ही सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत महिला स्वयं सहायता समूहों को 2,510 उचित मूल्य की दुकानों का आवंटन, ग्रामीण आवासीय अभिलेख (घरौनी) घर की महिला के नाम आदि जैसी रचनात्मक पहल नारी शक्ति के जीवन में सम्मान और आर्थिक प्रगति का प्रतीक हैं।

प्रदेश में 96 लाख से अधिक एमएसएमई इकाइयों ने युवाओं को जॉब सीकर से जॉब क्रिएटर बनाने का युगांतरकारी कार्य किया है। वर्ष 2016 में प्रदेश की बेरोजगारी दर 18 प्रतिशत थी जो अब तीन प्रतिशत है। निष्पक्ष एवं पारदर्शी प्रक्रिया के जरिये विभिन्न आयोगों एवं भर्ती बोर्ड द्वारा साढ़े आठ लाख से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी मिली।

इनमें से 1.38 लाख से अधिक महिलाएं हैं। परीक्षाओं के शुचितापूर्ण आयोजन के लिए उ.प्र. सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) कानून लागू किया गया है, जिससे छात्रों के मन में व्यवस्था के प्रति विश्वास जागा है। आठ वर्ष हमारी आस्था, अस्मिता, आर्थिकी और सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन का ऐतिहासिक कालखंड है ।सबसे बड़ी बात यह है कि बीते आठ वर्षों में प्रदेश में एक भी नया टैक्स नहीं लगाया गया। प्रदेश में डीजल—पेट्रोल दरें देश में सबसे कम हैं। इसके बाद भी उत्तर प्रदेश राजस्व सरप्लस स्टेट के रूप में समृद्धि के नए सोपान चढ़ रहा है। इस सफलता के पीछे रामराज्य की अवधारणा ही है।

खैर,योगी राज में तमाम अच्छे कार्य हो रहे हैं तो कहा यह भी जा रहा है कि प्रदेश की सत्ता योगी तक केन्द्रित हो कर रह गई है ।बीजेपी तक के सांसदों और विधायकों की नहीं सुनी जाती है ।योगी का सख्त आदेश है कि कोई विधायक सिफारिश लेकर किसी अधिकारी या थाना—चौकी पर नहीं जायेगा,परिणाम स्वरूप ब्यूरोक्रेसी और पुलिस निरंकुश हो गई है। योगी सरकार ने निवेश आकर्षित करने और नए उद्योगों को स्थापित करने की दिशा में कई कदम उठाए, लेकिन बेरोजगारी की समस्या अभी भी बनी हुई है। सरकारी भर्तियों में देरी, पेपर लीक की घटनाएं और युवाओं को अपेक्षित संख्या में नौकरियां न मिलना एक बड़ी चुनौती रही है। वहीं योगी सरकार ने भ्रष्टाचार पर नकेल कसने के दावे काफी किए, लेकिन कई विभागों में रिश्वतखोरी और सरकारी अधिकारियों की मनमानी की शिकायतें बनी हुई हैं। खासकर तहसील, थाने और नगर निकायों में भ्रष्टाचार की शिकायतें लगातार सामने आती रही हैं।

पेट्रोल—डीजल, खाद्य पदार्थों और रोजमर्रा की चीजों की महंगाई बढ़ी है। गन्ना किसानों को समय पर भुगतान न मिलने, फसलों के उचित दाम न मिलने और बिजली की बढ़ती दरों से किसान परेशान रहे हैं। सरकार ने अपराधियों पर कार्रवाई के लिए 'ठोक दो' नीति अपनाई, लेकिन पुलिस की मनमानी, फर्जी एनकाउंटर और निर्दोष लोगों पर अत्याचार के आरोप भी लगे। थानों में दलितों, पिछड़ों और गरीबों की सुनवाई न होने की शिकायतें अक्सर आती रही हैं।योगी सरकार की बुलडोजर नीति को एक तरफ सख्त कार्रवाई का उदाहरण बताया जाता है, लेकिन विपक्ष इसे पक्षपातपूर्ण और गरीबों के खिलाफ करार देता है। कई मामलों में बिना कानूनी प्रक्रिया पूरी किए ही घरों और दुकानों को ढहा दिया गया, जिससे विवाद हुआ। उधर, कई सरकारी योजनाओं की घोषणाएं हुईं, लेकिन उनका लाभ सभी जरूरतमंदों तक नहीं पहुंच पाया। पीएम आवास योजना, मुफ्त राशन योजना और स्वरोजगार योजनाओं में भ्रष्टाचार और भेदभाव की काफी शिकायतें सामने आईं हैं ।कुल मिलाकर योगी सरकार की वाह—वाह भी खूब हो रही है,वहीं कुछ लोगों को लगता है कि योगी राज में जनता कराह रही है ।उसकी आह को कोई सुनने वाला नहीं है।

बिना जरूरत के बढ़ते आपरेशन

—प्रियंका सौरभ—

क्या आपको मालूम है कि सिजेरियन डिलीवरी, या सी—सेक्शन, दुनिया में सबसे अधिक की जाने वाली सर्जरी है? सीजेरियन सेक्शन बनाम नार्मल डिलीवरी का विषय काफी चर्चा में रहता है, खासकर तब जब इसका जरूरत से ज्यादा उपयोग होने लगे। कुछ लोग इसे एक 'बिजनेस मॉडल'मानते हैं, तो कुछ इसे मेडिकल साइंस की उपलब्धि के रूप में देखते हैं। सीजेरियन सेक्शन एक सर्जिकल प्रक्रिया है, जो तब की जाती है जब सामान्य (नार्मल) डिलीवरी संभव न हो या माँ और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए जोखिम हो। लेकिन आजकल कई जगहों पर यह मेडिकल जरूरत से ज्यादा किया जा रहा है, खासकर निजी अस्पतालों में, जहाँ इसे जल्दी और सुविधाजनक समाधान के रूप में देखा जाता है। सीजेरियन अपने आप में गलत नहीं है, लेकिन जब यह व्यावसायिक फायदे के लिए या बिना ठोस मेडिकल वजह के किया जाता है, तब यह चिंता का विषय बन जाता है। सही जागरूकता और जिम्मेदारी से इसका उपयोग होना चाहिए। पिछले कुछ सालों में भारत सहित कई देशों में सीजेरियन की दर तेजी से बढ़ी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, केवल 10—15: मामलों में सीजेरियन आवश्यक होता है, लेकिन कई देशों में यह दर 50: या उससे अधिक हो चुकी है। भारत में कई निजी अस्पतालों में यह दर 50—80: तक देखी गई है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के निजी अस्पतालों में सीजेरियन डिलीवरी की दर 40—50: तक पाई गई, जबकि सरकारी अस्पतालों में यह लगभग 20—25: थी। स्वास्थ्य बीमा योजना और जननी—शिशु सुरक्षा कार्यक्रम जैसी योजनाओं में बिना आवश्यकता के मरीजों की सर्जरी कर दी जाती है, क्योंकि ऐसी योजनाओं में या तो प्रोत्साहन राशि मिलती है, या फिर बीमा कंपनी को लाभ होता है। इनमें सिजेरियन, हार्निया, गॉलब्लेडर, अपेंडिक्स आदि से सम्बंधित मामले अधिक हैं। यह दुखद है, क्योंकि ऐसे मामलों में सबसे ज्यादा शोषण गर्भवती महिलाओं का होता है। सीजेरियन डिलीवरी का खर्च्च सामान्य डिलीवरी से 2—5 गुना अधिक होता है, जिससे अस्पतालों को अधिक मुनाफा होता है। नार्मल डिलीवरी में घंटों का समय लग सकता है, जबकि सीजेरियन एक तय समय में पूरा किया जा सकता है, जिससे अस्पतालों और डॉक्टरों को कम समय में अधिक डिलीवरी करने का मौका मिलता है। कुछ डॉक्टर निजी अस्पतालों में अपनी सुविधा के अनुसार डिलीवरी शेड्यूल करना पसंद करते हैं। कुछ महिलाओं को लेबर पेन का इतना डर होता है कि वे खुध्द सीजेरियन करवाने के लिए तैयार हो जाती हैं। कई बार मरीजों को डराकर यह बताया जाता है कि बच्चा खतरे में है, जिससे वे सीजेरियन के लिए मजबूर हो जाती हैं।

कई मामलों में सीजेरियन जरूरी होता है, जैसेरू बच्चे की पोजिशन सही न हो, जैसे ब्रीच पोजिशन। डिलीवरी के दौरान जटिलताएँ हो जाएँ, जैसे प्लेसेंटा प्रीविया, गर्भनाल का फँसना। माँ को गंभीर स्वास्थ्य समस्या हो, जैसे हाई बीपी, डायबिटीज, हृदय रोग। बच्चे को ऑक्सीजन की कमी हो और तुरंत डिलीवरी जरूरी हो। पहले भी सीजेरियन हो चुका हो और नार्मल डिलीवरी सुरक्षित न हो। लेकिन जब बिना किसी ठोस मेडिकल वजह के सिर्फ पैसे कमाने के लिए सीजेरियन किया जाए, तो यह नैतिक रूप से गलत है। कई प्राइवेट अस्पताल सीजेरियन को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि यह जल्दी हो जाता है और अधिक खर्च्च आता है। महिलाओं का डर और जागरूकता की कमी के चलते कई महिलाएँ दर्द से बचने के लिए सीजेरियन चुन लेती हैं, जबकि नार्मल डिलीवरी अधिक लाभदायक होती है। महिलाओं को इस बारे जागरूक किया जाए, ताकि वे नार्मल डिलीवरी को प्राथमिकता दें। डॉक्टर्स को जिम्मेदारी से काम करना चाहिए, सिर्फ जरूरत पड़ने पर ही सीजेरियन करना चाहिए। प्राकृतिक तरीकों को बढ़ावा दिया जाए, जैसे गर्भावस्था के दौरान योग और सही डाइट ताकि नार्मल डिलीवरी आसान हो सके।

इन सबके साथ—साथ सरकार को सख्ती से नियम लागू करने चाहिए, ताकि अनावश्यक सीजेरियन कम हों।

क्या है 'गुड टच' और 'बैड टच'

—क्षमा शर्मा —

पिछले दिनों इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक किशोरी के मामले में विवादास्पद फैसला दिया। मामला नवम्बर 2021 में उत्तर प्रदेश के कासगंज शहर का है। लड़की की मां का कहना है कि शाम के वक्त वह अपनी 14 वर्षीय लड़की के साथ अपनी देवरानी के गांव से लौट रही थी। तभी एक मोटरसाइकिल उनके पास आकर रुका, जिस पर 3 लड़के पवन, आकाश और अशोक बैठे हुए थे। एक लड़के ने मां से कहा कि वह लड़की को उसके साथ जाने दे। वह उसे सुरक्षित घर छोड़ देगा। मां ने उसकी बात पर विश्वास किया और बच्ची को उनके साथ जाने दिया। रास्ते में इन 3 लड़कों ने बच्ची के साथ अपराध को अंजाम दिया। उसके स्तन खींचे। उसका नाड़ा खींचकर तोड़ दिया और पुलिया के नीचे खींचकर ले जाने लगे। लड़की रोने लगी। तभी वहां से ट्रैक्टर पर गुजर रहे 2 लोगों ने लड़की का रोना सुना तो तीनों उन दोनों को तमंचा दिखाते हुए वहां से भाग गए। इन तीनों में मुख्य अपराधी पवन के पिता से जब लड़की की मां ने शिकायत की तो उन्होंने उसे धमकी दी।

इसके बाद लड़की की मां थाने पहुंची लेकिन वहां से भी निराशा हाथ लगी। तब यह मामला कासगंज की विशेष कोर्ट में पहुंचा जहां पवन और आकाश नामक लड़कों पर बलात्कार और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। इस मामले में उस दिन ट्रैक्टर पर आए दोनों लोग गवाह बने। तब अभियुक्तों ने इस मामले को इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी। और फैसला देखिए कि जज साहब ने कहा कि इस मामले में अभियुक्त बलात्कार की कोशिश कर रहे थे, यह साबित नहीं होता। अदालत ने कहा कि बलात्कार करने की कोशिश और अपराध के बीच तैयारी के अंतर को सही तरीके से समझा जाना चाहिए। उच्च न्यायालय ने निचली अदालत को यह निर्देश भी दिया कि अभियुक्तों के खिलाफ कपड़े उतारने के इरादे से हमला या बल प्रयोग और पॉक्सो के तहत गम्भीर यौन हमले के तहत मुकद्दमा चलाया जा सकता है।

यानी कि कल को कोई किसी लड़की को चलती गाड़ी, बस या सड़क से खींचकर ले जाए, उसके अंग— प्रत्यंग छुए , उसे किसी निर्जन स्थान पर ले जाए तो इन्हें बलात्कार की कोशिश नहीं माना जाना चाहिए ।एक तरफ बिशाखा गाइडलाइंस के अनुसार लड़की को कोई अश्लील चित्र या कार्टून दिखाना अथवा उससे कोई भद्दा मजाक करना भी अपराध की श्रेणी में आता है। नए दुष्कर्म कानून के अनुसार लड़की या स्त्री को 14 सैकेंड घूरना तक अपराध है। ऐसे में इस नाबालिग लड़की के स्तनों को खींचना, उसका नाड़ा खोलना, उसे पुलिया के नीचे खींचकर ले जाने की कोशिश क्या किसी अच्छी मंशा से की जा रही थी? और क्यों की जा रही थी? एक तरफ लड़की को सुरक्षित घर छोडने का वायदा उसकी मां से किया गया था, मगर तीनों लड़कों ने लड़की को अकेली समझ उससे बदतमीजी की। आखिर लड़कियों को इस तरह के अपराधों का सामना क्यों करना पड़े? किसी की भी इतनी हिम्मत कैसे हो? कल को तो लोग सड़क—सड़क , मोहल्ले में ऐसा करने लगेंगे क्योंकि उन्हें मालूम होगा कि उच्च न्यायालय ने ऐसा फैसला पहले ही दिया हुआ है जहां लड़कियों से इस तरह का बर्ताव अपराध की श्रेणी में नहीं आता।

आखिर जज महोदय इस निर्णय पर पहुंचे कैसे। लड़की का रोना क्या कोई नाटक था या वह इस तरह के बर्ताव को पसंद कर रही थी इसलिए खुशी में रो रही थी। सोचिए कि अगर ट्रैक्टर पर सवार 2 लोग वहां न पहुंचे होते, तो शायद यह बच्ची सामूहिक दुष्कर्म का शिकार हो गई होती। क्या गुड टच और बैड टच के बारे में जज साहब को मालूम नहीं?क्या निर्भया से लेकर अब तक हमारी सोच कतई नहीं बदली? और यदि न्यायाधीश लोग ही इस तरह के फैसले देने लगेंगे तो यह उच्च न्यायालय की साख का सवाल भी है। यह एक पुरुषवादी सोच भी है जो मन में कहीं गहरी सोच में बैठी हुई है कि लड़की के साथ कुछ भी कर लो, वह हमारा क्या कर लेगी। इसीलिए पूछने वाले कई ज्ञानी यह भी कह सकते हैं कि आखिर लड़की की मां ने उसे उन लड़कों के साथ भेजा ही क्यों था।

यानी कि लड़कों के साथ भेजोगी तो ऐसा ही होगा। यह अधिकार आखिर लड़कों को कैसे मिला। बच्चियों के प्रति हर रोज होने वाले ऐसे अपराधों से क्या हमारी रूह जरा भी नहीं कांपती? या यह सोच वहीं की वहीं है कि लड़की अगर बाहर निकलेगी तो अपराध की शिकार होगी ही, इसलिए उसे घर से बाहर ही नहीं निकलना चाहिए या जन्म लेते ही खत्म कर दीजिए। न वे होंगी, न अपराध होंगे। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। और यह धरती अपराधों के भार से मुक्त हो जाएगी। लड़की को गलत मंशा से छूना , उसे निर्वस्त्र करना, खींचकर ले जाना कैसे अपराध नहीं है, यह समझ में नहीं आया। क्या अदालतों के सारे पुराने फैसले पलट दिए जाएंगे? कायदे से तो इन अपराधियों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए। राष्ट्रीय महिला आयोग और उत्तर प्रदेश महिला आयोग को इसका संज्ञान लेना चाहिए। केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्री को भी चुप नहीं रहना चाहिए। मीडिया में जब से यह खबर छपी है तब से बहुत—सी महिला नेताओं ने इस पर नाराजगी भी प्रकट की है।

आधी रात को अचानक नींद से जागा छोटा भाई, साथ सोए भाई को चाकू से गोद कर मार डाला

संवाददाता–महराजगंज। बेड पर साथ सोया भाई आधी रात को अचानक नींद से जागा और मंझले भाई पर चाकू से हमला कर दिया। परिवार के लोग घायल युवक को लेकर तत्ध्काल नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पहुंचे। वहां डॉक्टरों ने उसकी हालत नाजुक देख मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया। गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। घटना का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। गोरखपुर पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा रही है। नगर पंचायत परतावल के महंत अवेद्यनगर वार्ड की है। मृतक संदीप मद्धेशिया (उम्र 22 वर्ष) तीन भाइयों में दूसरे नंबर का था। वह फुटवियर का कारोबार करता था। आरोपित छोटे भाई किशन के साथ घर में एक ही बिस्तर पर सोता था। तीनों भाइयों में अभी किसी की शादी नहीं हुई थी। परिजनों के अनुसार बीती रात 12 बजे बिस्तर पर दोनों भाइयों के बीच विवाद हुआ। आरोप है कि छोटे भाई ने घर में रखे चाकू से संदीप पर हमला कर दिया, जिससे वह लहूलुहान हो गया। शोर से परिजनों की नींद टूट गई। संदीप को बिस्तर पर खून से लथपथ देख उसे फौरन इलाज के लिए परतावल सीएचसी ले गए। चिकित्सकों ने हालत नाजुक देख मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। हमला करने वाले छोटे भाई के बारे बताया जा रहा है वह घटना के बाद सदमे में आकर बीमार हो गया है। परिजन उसे इलाज के लिए गोरखपुर के एक अस्पताल में भर्ती कराए हैं। पनियरा विधायक ज्ञानेंद्र सिंह ने सीएचसी पहुंच घटना की जानकारी ली। उन्होंने परिजनों को सात्वना दिया। महाराजगंज श्यामदेउरवा थाने के प्रभारी अभिषेक सिंह ने बताया कि शव को गोरखपुर पुलिस कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा रही है। अभी तहरीर नहीं मिली है। प्रकरण में अन्य विधिक कार्रवाई जारी है।

मजदूर की मौत परिजनों का हंगामा, लगाया जाम

संवाददाता–गोण्डा। एक मजदूर की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया है। नगर कोतवाली क्षेत्र के धनौली गांव के रहने वाले 40 वर्षीय रंजीत कोरी का शव रेलवे ट्रैक के किनारे मिला। मृतक के परिजनों ने दुखहरन नामक व्यक्ति पर हत्या का आरोप लगाया है। घटना की जानकारी के अनुसार रंजीत कोरी कल सुबह 9 बजे सोनी कपूर गांव में प्रेम कुमारी के यहां मजदूरी करने गए थे। देर रात तक घर न लौटने पर परिजनों ने उनके मोबाइल पर संपर्क करने का प्रयास किया, लेकिन फोन बंद मिला। देर रात 11रू30 बजे पुलिस ने परिजनों को सूचित किया कि सोनी गुमटी अंडरग्राउंड रेलवे लाइन के पास रंजीत का शव मिला है। परिजनों ने पुलिस को लिखित शिकायत दी है। पुलिस की निष्क्रियता से नाराज होकर परिजनों ने शाम 5रू30 बजे गोंडा–उतरौला रोड पर शव रखकर जाम लगा दिया। प्रदर्शन के दौरान पुलिस और परिजनों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। एक घंटे की मशक्कत के बाद पुलिस ने कार्रवाई का आश्वासन देकर जाम खुलवाया। मृतक के बेटे सचिन ने चेतावनी दी है कि यदि रात तक मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई, तो वे अंतिम संस्कार नहीं करेंगे। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मृतक के बेटे सचिन ने आरोप लगाया है कि मेरे पिता रंजीत कोरी को सोनी हरलाल गांव के रहने वाले दुखहरन द्वारा कई बार हत्या करवाने की धमकी दी गई थी। और उनके द्वारा ही मेरे पिता रंजीत कोरी की हत्या की गई है इनके खिलाफ मुकदमा दर्ज करके कार्रवाई की जाए। वहीं पूरे मामले को लेकर की गोंडा नगर कोतवाल विवेक त्रिवेदी ने बताया कि पुलिस द्वारा तहरीर के आधार पर जांच करके कार्रवाई की जा रही है। प्रथम दृष्टया आत्महत्या का मामला है परिजन नाराज होकर की विरोध प्रदर्शन कर रही थी। गोंडा उतरौला मार्ग को जाम करके समझा बुझा करके जाम खत्म करवा दिया गया है।

राम देत नहीं बनइ गुंसाई, देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । श्रीरामचरितमानस में महाकवि गोस्वामी तुलसीदासजी ने भगवान श्री राम और जनकनन्दिनी सीता के विवाह का वर्णन बड़ी ही सुंदरता से किया है। इनका विवाह पूरी रामायण की सबसे महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि प्रकृति के नियंता को ज्ञात था कि जीवन में चौदह वर्ष का वनवास और रावण जैसे अहंकारी असुर का वध धैर्य के वरण के बगैर संभव नहीं है। अतः श्रीराम–जानकी का विवाह मुख्य रूप से यह एक बड़े संघर्ष से पूर्व धैर्यवरण का प्रसंग है। यह सद् विचार कथा व्यास स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने नारायण सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा आयोजित 9 दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा का दुबौलिया बाजार के राम विवाह मैदान में छठवें वे दिन व्यक्त किया।

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न के नामकरण, यज्ञ रक्षा हेतु विश्वामित्र के साथ वन गमन आदि प्रसंगो का विस्तार से वर्णन करते हुये महात्मा जी ने कहा कि विश्वामित्र के आग्रह पर दशरथ श्रीराम को भेजने के लिये तैयार नहीं हुये **" राम देत नहीं बनइ गुंसाई। देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माही।।** किन्तु जब गुरू वशिष्ठ ने उन्हें समझाया कि सब मंगल होगा राम के जन्माक्षर बता रहे हैं कि इस वर्ष इन चारों कुमारों के विवाह का योग है तो यह सुनकर दशरथ हर्षित हो गये। दशरथ सद्गुरू के अधीन थे और गुरूदेव की आज्ञा को शिरोधार्य किया।

9 दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा

कथा प्रसंगो के क्रम में महात्मा जी ने कहा कि जीवन में सदगुण से ही मिठास आती है। जिसके जीवन में मधुरता नही ईश्वर उसे प्रिय नही है। महादान और द्रव्यदान से भी मान दान श्रेष्ठ है। विश्वामित्र के साथ श्रीराम लक्ष्मण चले। विश्वामित्र के गुणों की चर्चा करते हुये महात्मा जी ने कहा कि विश्व जिसका मित्र है वही विश्वामित्र है। जगत मित्र बनोगे तो राम, लक्ष्मण तुम्हारे पीछे–पीछे आयेंगे। भगवान कहते हैं जब जीव मेरे दर्शन के लिये आता है तो मैं खड़ा होकर उसे दर्शन देता हूं। ईश्वर की दृष्टि तो जीव की ओर अखण्ड रूप से है, जीव ही ईश्वर की ओर दृष्टि नहीं करता है। राम जी सभी से प्रेम करते हैं। वे हमेशा धनुष वाण अपने साथ रखते हैं। धनुष ज्ञान का और वाण विवेक का स्वरूप है। ज्ञान और विवेक से सदा सज्जित रहो क्योंकि काम रूपी राक्षस न जाने कब विघ्न करने आ जाये। जिसकी आंखों में पाप है वही राक्षस है। कार्यक्रम में अन्नपूर्णा सिंह श्रीराम, क्षमा सिंह सीताजी और लक्ष्य लक्ष्मण के रूप में श्रोताओं को भा गये।

श्रीराम कथा के छठवें दिन कथा व्यास का विधि विधान से मुख्य यजमान अजय सिंह, विभा सिंह ने कथा व्यास का पूजन किया। आयोजक बाबूराम सिंह, अनिल सिंह, कन्हैया दास, राजननरायन पाण्डेय, सत्यनरायन द्विवेदी, राधेश्याम, सभाजीत चौधरी, जीत बहादुर सिंह, विश्वम्भर, दुर्गा प्रसाद गुप्ता, श्यामलाल गुप्ता, दंगल गुप्ता, रामकिंकर सिंह, संजीव सिंह, सुनील सिंह, जसवन्त सिंह, अनूप सिंह, प्रमोद पाण्डेय, हर्षित सिंह, आदित्य सिंह, अरूण सिंह, मनोज गुप्ता, देवनरायन चौहान, डा. के.पी. मिश्रा, नरसिंह सिंह, नीरज गुप्ता, रामू, इन्द्रपरी सिंह, शीला सिंह के साथ ही बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक श्रीराम कथा में शामिल रहे।

नवरात्र को लेकर लेहड़ा मंदिर पहुंचे डीएम–एसपी, तैयारियां देखी

संवाददाता–महराजगंज। डीएम अनुनय झा एवं एसपी सोमेंद्र मीना ने आगामी रामनवमी और नवरात्रि त्योहार को लेकर लेहड़ा मंदिर पहुंचकर सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। मंदिर में दर्शन कर की गई व्यवस्था का जायजा लिया। जरूरी निर्देश दिया। डीएम ने मंदिर में यातायात रूट के साथ–साथ सुरक्षा व्यवस्था और अन्य इंतजामों की जानकारी ली। उन्होंने निर्देशित किया कि मंदिर में दर्शन के लिए पुरुष व महिलाओं के लिए पृथक प्रवेश व निकास की व्यवस्था सुनिश्चित की जाय। बीडीओ और ईओ बृजमनगंज को मंदिर परिसर और आसपास पर्याप्त साफ–सफाई के लिए कहा। ईओ बृजमनगंज को मोबाइल शौचालय और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। डीएम ने मंदिर मार्ग पर अतिक्रमण को हटवाने का निर्देश दिया, ताकि श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न होने पाए। एसपी ने पार्किंग, बैरिकेडिंग को लेकर सीओ फरेंदा को आवश्यक निर्देश दिया। उन्होंने मंदिर में भीड़भाड़ वाले दिनों महिला सुरक्षा को लेकर विशेष इंतजाम करने को कहा। निरीक्षण के दौरान एसडीएम फरेंदा मुकेश सिंह, सीओ फरेंदा अनिरुद्ध कुमार, बीडीओ बृजमनगंज सच्चिदानंद शुक्ला सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

हंगामे के बाद टल गई भारत–नेपाल मैत्री हा बाजार की नीलामी

संवाददाता–महराजगंज। ठूठीबारी कस्बे के मर्चहवा रोड पर स्थित भारत–नेपाल मैत्री हाट बाजार की नीलामी प्रक्रिया में हंगामा हो गया। ब्लॉक प्रमुख रमाशंकर गौतम व बीडीओ शमा सिंह की मौजूदगी में शुरू नीलामी प्रक्रिया की शुरुआत होते ही भारी हंगामा और शोर शराबा शुरू हो गया। ग्रामीण बोली प्रक्रिया में अनियमितता का आरोप लगाते हुए लकी ड्रॉ के माध्यम से नीलामी की मांग पर अड़ गए। इसको देखते हुए नीलामी प्रक्रिया को प्रशासन ने स्थगित कर दिया। मौके पर मौजूद कोतवाली पुलिस ने लोगों को शांत कराया। ब्लॉक प्रमुख व बीडीओ की मौजूदगी में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसान कस्बे के मर्चहवा रोड पर स्थित नवनिर्मित भारत–नेपाल मैत्री हॉट बाजार की नीलामी प्रक्रिया शुरू की गई। पहली बोली कस्बे के श्रवण निगम ने 251 रुपया लगाया। वहीं दूसरी बोली मुमताज के 501 रुपया लगाने के बाद तीसरी बोली सज्जन लाल ने 5001 लगाया। इसके बाद पंडाल में बैठे लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया और बोली प्रक्रिया को रोक दिया गया। पंडाल में मौजूद सभी व्यापारियों ने हस्ताक्षर अभियान चला कर लकी ड्रा पर सहमति जताई, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। लोगों का कहना रहा कि लकी ड्रा से लोगों को समान अवसर मिलेगा। वहीं यह प्रक्रिया विवाद से मुक्त होगी।

इस बाबत बीडीओ शमा सिंह ने बताया कि ग्रामीणों ने हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से लकी ड्रा पर सहमति जताई है। इसके विषय में उच्चाधिकारियों को अवगत करने के बाद अगले टेंडर प्रक्रिया की समय सीमा तय कर अवगत करा दिया जाएगा। इस दौरान ग्राम पंचायत अधिकारी पिन्टू रौनियार, पंचायत सहायक विनय पांडेय रौनियार, अवधेश निगम, वसीम राइन, कुलदीप निगम, सज्जन लाल निगम, मनोज गौंड सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे। मर्चहवा रोड पर स्थित नव निर्मित भारत–नेपाल मैत्री हॉट बाजार का ब्लॉक प्रमुख रमाशंकर व बीडीओ निचलौल शमा सिंह ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। कहा कि हाट बाजार के बनने से दोनों देशों के संबंध प्रगाढ़ होने के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत होंगे। बाजार का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के व्यापारियों को नए अवसर प्रदान करना व आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है। इस मौके पर पिछड़ा मोर्चा के मंडल उपाध्यक्ष दुर्गा प्रसाद गुप्त, अतुल रौनियार, विनोद मद्धेशिया, सचिंद्र गुप्त, मनोज गौंड आदि लोग मौजूद रहे।

रुक्मणी विवाह, सुदामा चरित्र की कथा सुन भावविभोर हुए श्रद्धालु

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। हरैया ब्लॉक के समौड़ी गांव में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के छठवें दिन कथा व्यास पं. राजेश पाण्डेय ने रुक्मणी विवाह और सुदामा चरित्र की कथा सुनाई। कथा सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो गए। कथा व्यास ने कहा कि रुक्मणी विदर्भ देश के राजा भीष्म की पुत्री और साक्षात लक्ष्मी जी का अवतार थीं। राजा भीष्म ने लक्ष्मी को पुत्री के रूप में प्राप्त किया, लक्ष्मी तो सभी को किसी न किसी रूप में प्राप्त हैं जैसे धन,पद, प्रतिष्ठा आदि। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि अपनी लक्ष्मी को राजा भीष्म की तरह नारायण से जोड़ता कौन है। रावण, कंस, दुर्योधन जैसे लोगों ने अपनी लक्ष्मी को मांस, मदिरा, जुआ, दुराचार जैसे कुकर्मों से जोड़ा जिसके कारण उनका समूल नाश हो गया।

कृष्ण सुदामा मिलन की कथा का वर्णन करते हुए कथा व्यास ने कहा कि पति यदि धन,संपत्ति, सुख, सुविधा दे और पत्नी ऐसे पति की सेवा करे तो इसमें आश्चर्य क्या है। धन्य है सुदामा की पत्नी सुशीला जिन्होंने भूखे रहकर भी दरिद्र पति को भी परमेश्वर मानकर सेवा करती रही। भगवान श्री कृष्ण ने जो संपत्ति कुबेर के पास भी नहीं है उसे सुदामा को दिया। सारा विश्व श्रीकृष्ण का वंदन करता है और वे एक दरिद्र ब्राम्हण और उनकी पत्नी सुदामा का वंदन करते हैं। सुदामा ने ईश्वर से निरपेक्ष प्रेम किया तो उन्होंने सुदामा को अपना लिया और अपने जैसा वैभवशाली भी बना दिया। कथा को विश्राम देते हुए कथा व्यास ने कहा कि सतकर्म का कोई अन्त नही, कथा सुनकर जीवन में उतारोगे तो ही श्रवण सार्थक होगा।

इस दौरान मुख्य यजमान राम सुमति मिश्र, सीता देवी, राम प्यारे मिश्र, पंकज मिश्र, जय प्रकाश शुक्ल, प्रमोद शुक्ल बब्बू, बब्बन शुक्ल, हिमांशु त्रिपाठी, देवेंद्र नाथ मिश्र बाबू जी, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, श्रीनाथ मिश्र, सुरेंद्र नाथ मिश्र, नन्द कुमार मिश्र, माधव दास ओझा, इंद्रा ओझा, मंटू पाण्डेय, चंद्र भाल शुक्ल, अंबिका प्रसाद ओझा, रामफूल मिश्र, उमेश मिश्र, चन्द्र प्रकाश मिश्र, पशुपतिनाथ शुक्ल, विश्व प्रकाश मिश्र, राम जियावन शुक्ल, राधा मोहन मिश्र, लालजी मिश्र, अशोक कुमार मिश्र, महेंद्र कुमार मिश्र, पवन शुक्ल, गणेश शुक्ल, सुभाष मिश्र, दिवाकर पाण्डेय, रामप्रसाद मिश्र, विजय मिश्र, चंद्रमणि मिश्र, प्रेम शंकर ओझा, जगदम्बा ओझा, ओंकार यादव, राधिका चौधरी, भरत, संतोष मिश्र, रवीश कुमार मिश्र, वेद प्रकाश मिश्र, उत्तम मिश्र, सतीश शुक्ल लायक, हरीश, शिवम, गोपाल, रत्नेश, प्रभात, राम, अत्रय, बाबूलाल, लल्लू सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

ट्रैक्टर-ट्राली की ठोकर से शौचालय की दीवार गिरी, मासूम की मौत

संवाददाता–देवरिया। ट्रैक्टर की ठोकर से शौचालय की दीवार गिरने से एक मासूम की मौत हो गई। हादसा मंगलवार की सुबह सुरौली थाना क्षेत्र के पैकौली नगऊर टोला पर हुआ। घटना के बाद घर में कोहराम मच गया। सुरौली थाना क्षेत्र के पैकौली के नगऊर टोला निवासी राम सबद कुशवाहा के घर 23 मार्च से भागवत कथा चल रही है। मंगलवार की सुबह भी कथा चल रही थी। करीब 8रू30 बजे गांव का एक व्यक्ति उनके घर के समीप ट्रैक्टर ट्राली मोड़ रहा था उसी दौरान ट्राली की ठोकर से शौचालय की दीवार गिर गई जिसमें रामसबद का पोता दीपक (8) पुत्र राकेश दब गया। तेज आवाज के साथ हुए हादसे देख पहुंचे लोग मासूम को मलबे से बाहर निकाल मेडिकल कालेज लेकर भागे जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। किसी ने घटना की सूचना पुलिस के दे दी। सुरौली पुलिस ने मौके से ट्रैक्टर ट्राली और चालक को हिरासत में ले लिया। घर में मासूम के मौत से कोहराम मचा हुआ है।

योगी राज में बदला प्रदेश –दारा सिंह चौहान

संवाददाता–गोण्डा। योगी सरकार के 8 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री दारा सिंह चौहान ने शिरकत की। वेंकटाचार्य क्लब में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। मंत्री दारा सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना के तहत सैकड़ों युवाओं को लोन वितरित किए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश अब दूसरे राज्यों और देशों को देने वाला राज्य बन गया है। योगी सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था मजबूत हुई है। अपराधी या तो जेल में हैं या प्रदेश छोड़कर भाग गए हैं। महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सख्त कार्रवाई की जा रही है। मंत्री ने कहा कि 2017 से पहले उद्योगपति प्रदेश से पलायन कर रहे थे। अब बड़े–बड़े उद्योगपति यहां निवेश करने आ रहे हैं। युवाओं को रोजगार देने के लिए मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना शुरू की गई है। गोंडा के विकास का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जिले में सड़कों का जाल बिछा है। गांवों का विकास हुआ है। स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर हुई हैं। हर व्यक्ति को अस्पतालों में निशुल्क इलाज मिल रहा है। सरकार ने महाकुंभ में करोड़ों की संख्या में लोगों को स्नान कराया। बेहतर सुविधा दी। बहुत से लोग यूपी सरकार के काम से खुश नहीं थ, इसीलिए उन्होंने कुंभ के दौरान सरकार को बदनाम करने का भी काम किया। लेकिन वह सफल नहीं हुए और योगी सरकार ने एक अच्छा कार्यक्रम करके इतिहास रचा है। 2 साल के अंदर उत्तर प्रदेश में जो भी विकास के कार्य अभी चल रहे हैं उन्हें पूरा किया जाएगा। उत्तर प्रदेश उन्नतिशील प्रगतिशील और विकासशील प्रदेश बनेगा। शिक्षा के क्षेत्र में काफी उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुधार को लेकर के काम किया गया। आज जिले में एआई लैब बना रहे हैं विज्ञान लैब बनाए जा रहे हैं। विद्यालयों को स्मार्ट क्लास से जोड़ा जा रहा है । मॉडल स्कूल बनाया जा रहा है। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव योगी सरकार के काम पर क्या सवाल उठाएंगे। उनके सरकार में तो उत्तर प्रदेश में खूब भ्रष्टाचार हुए हर विभाग में भ्रष्टाचार हुआ।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ लापता

संवाददाता–बलरामपुर। सरयू नहर पुल से संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ लापता हो गया। पुल पर उसकी खड़ी साइकिल व चप्पल बरामद हुआ है। कुछ शराब के खाली डिब्बे भी पाए गए हैं। गुमशुदा अधेड़ के परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। उनका कहना है कि हत्या कर शव नहर में फेंक दिया गया है। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने मामले की पड़ताल की है। स्थानीय गोताखोर नहर में अधेड़ की तलाश कर रहे हैं। घटना स्थानीय थाना क्षेत्र के भरहापारा बैरिहवा गांव के बीच सरयू नहर पुल पर सोमवार शाम हुई है।

तेज रफ्तार डंपर ने मामा–भांजे को कुचला, दर्दनाक मौत

संवाददाता–बहराइच। मंगलवार की सुबह तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार मामा–भांजे को रौंद दिया। हादसे में दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी ली। घटना से परिवारों में चीख पुकार मची हुई है। हादसा कोतवाली नगर क्षेत्र के झिंगहाघाट पुल के पास हुआ। मूल रूप से रामगांव थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत धर्मनपुर के मजरा साईंगांव निवासी सियाराम लोधा (55) सुबह गोंडा जिले के करनैलगंज में लगे बुढ़वा मेला जा रहे थे। साथ में गांव के रिश्ते से भांजा अर्जुन यादव (25) भी था। बहराइच–नानपारा हाईवे पर झिंगहाघाट पुल के पास डंपर ने बाइक में सामने से टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार मामा–भांजे उछलकर सड़क पर गिरे। डंपर के पहिए के नीचे आने से दोनों की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी ली। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। बताया गया कि मृतक अर्जुन तीन भाइयों में दूसरे नंबर का था। वह पढ़ाई कर रहा था। पिता रामहरख खेती–किसानी करके परिवार का भरण–पोषण करते हैं। अर्जुन की मौत से घरवालों का रो–रोकर बुरा हाल है। वहीं मृतक सियाराम किसान था। खेती करके परिवार चलाता था। कोतवाल राकेश सिंह ने बताया कि डंपर को कब्जे में लिया गया है।

न्यू इकरा पब्लिक स्कूल के छात्रों का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषितः छात्रों को पुरस्कृत कर बढाया हौसला

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मंगलवार को न्यू इकरा पब्लिक स्कूल रहमतगंज गांधीनगर में छात्रों को सत्र 2024– 25 का वार्षिक रिजल्ट दिया गया । इस अवसर पर प्रबंधक डा अजीज आलम एवं डायरेक्टर अयाज अहमद के द्वारा क्लास में प्रथम से तीसरे स्थान तक आने वाले छात्रों एवं स्कूल टॉपर्स को पुरस्कृत किया गया और उनकी हौसला अफजाई की गई। क्लास नर्सरी से 8 तक में प्रथम रैंक पर इश्रा फातिमा, आयात खान, रुश्दा फातिमा, मुहम्मद अबु हुजैफा, रिदा परवीन,अब्दुल अजीम, सैयद फातिमा, अरसलान अहमद कबीर,मुहम्मद साद, अलीजा फातिमा, सिदरा जीनत,सलमान शकील, तश्मियां, रिदा शकील ,उम्मी रिफका,सादिया खान,इकरा खातून,इकरा खातून, रहमआ खान, जिया मेहनाज ,रैंक द्वितीय पर हसन खान,कायनात,माही अहमद, मुहम्मद जिहान,हम्माद अहमद, शमाईल रजा, ईलमा,मुहम्मद फैशल,मुहम्मद रेयान,एलिजा फातिमा, मुहम्मद राशिद, फरीहा, सिदरा,एमएम आजम, काजी अलीना, आयमान अहमद, अलीना,उम्मी कुलसुम, तथा रैंक 3तक पर मुहम्मद अजान, अफआन, अनबिया, मुहम्मद अरहान,फातिमा रिजवान, मुबाशिर हयात,जुनैद , शहजाइब हसन,अनस असद, मर्जियआ जहरा,उम्मी हबीबा,हसीबा, आसया अकरम, वरदा अंजुम, कधजी ताबिश, नम्रआ शोएब, फहीमा,आयशा अलीशा मुस्तफा, रही। इसके अलावा बच्चो को फुल अटेंडेंस, क्लीनलीनेस, गुड बिहेवियर, पर आयशा, अदीबा, अजका,नजीब, इब्राहिम आरिफ सिद्दीकी, हाला फातिमा,अली कमर,मुआवीय,जैद मरियम जमाल,मुहम्मद तकी,आहिल रजा फहद खान,सारा खान, अल्फिया, अहमद, मुहम्मद बेलाल, अफजल, रेहान खान,नवाज ,मुदस्सर, अलएशा, अब्दुल अहद मुहम्मद ओवैस,मिसबाह ,अब्दुल हादी,जैनब सिद्दीकी,शावेज खान, नश्रा फातिमा, को इनाम देकर पुरस्कृत किया गया । स्कूल टॉपर जूनियर के.जी.– अब्दुल अजीम क्लास यूकेजी (99.80:), स्कूल टॉपर जूनियर –अलीजा फातिमा क्लास 2दक (99:), स्कूल टॉपर सीनियर –जिया मेहनाज क्लास 8जी (99.33:) रहे। मौके पर रफी मोहम्मद,अली अरशद, मुहम्मद आसिफ , मोहन असलम, मौजूद रहे। न्यू इकरा पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य जेबा शाहीन ने सभी बच्चो को सफल होने की शुभकामनाएं दीं । जिसमें तस्लीम जैनब, अम्बरी, शगुफ्ता ,हाफिज बद्रे आलम, फरहत, रजिया ,आयमान मैम आदि मौजूद रहे।

NEW IQRA PUBLIC SCHOOL
RAHMATGANJ GANDHI NAGAR - BASTI
CLASS NUR TO VIII ENGLISH MEDIUM

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान नवम् अपर जिला जज महोदय फैजाबाद

सि0अ0सं0– 6/2023

धमसादीन
बनाम
रामकुमार आदि

बनाम–1–रामकुमार पुत्र काली प्रसाद 2–श्रीमती शकुन्तला पत्नी काली प्रसाद निवासीगण ग्रा0 अस्थना परगना पश्चिम राठ तहसील मिल्कीपुर जिला–फैजाबाद/अयोध्या 3–विमलेन्द्र प्रताप मिश्र 4–शैलेन्द्र प्रताप मिश्र पुत्रगण रमेन्द्र मोहन मिश्र निवासीगण–राज सदन राहट अयोध्या परगना हवेली अवध तहसील सदर जिला–अयोध्या

तारीख पेशी 02–04–2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2025 के माह 04 के 02 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 25 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0)/एफ0टी0सी0 महोदय फैजाबाद

स0प्र0– 20/2023

विमला आदि
बनाम
ओम प्रकाश

बनाम– ओम प्रकाश पुत्र रामजस निवासी ग्राम– कदईकला परगना खण्डासा तहसील मिल्कीपुर जिला–अयोध्या /फैजाबाद

तारीख पेशी 31–03–2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2025 के माह 03 के 31 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 25 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद के द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा अर्न्तगत धारा 372 उत्तराधिकार अधि0

M.N.R.N0. 118/2024

इन्द्रावती उर्फ उर्मिला
बनाम
सरकार उत्तर प्रदेश द्वारा कलेक्टर महोदय अयोध्या हर खासो आम

मृतक–स्व0 विजय कुमार पुत्र श्री राम बहोर निवासी ग्रा0 करमा कोरड़ी पो0 करमा कोरड़ी बाजार परगना–हवेली अवध तहसील सदर जिला –अयोध्या

मृत्यु दिनांक–

पेशी दिनांक– 30–03–2025

अपने मृतक को देय ऋण औरं प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये उत्तराधिकार प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये प्रार्थना–पत्र के अर्न्तगत धारा 372 अधिनियम संख्या 39 सन 1925 ई0।

चूंकि श्री निवासी ग्राम परगना तहसील जिला ने उत्तराधिकार प्रमाण–पत्र की अभिप्राप्ति के लिये आवेदन किया और 2025 के माह 03 के 30 दिवस का आवेदन की सुनवाई के लिये तिथि निश्चित की गयी है।

अतः यह उद्घोषणा निकाली जाती है कि जिस किसी को उपरोक्त आवेदन के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो वह स्वयं अथवा अधिवक्ता द्वारा न्यायालय सिविल जज सी0डि0 फैजाबाद के न्यायालय में दिनांक 30–03–2025 को अपरान्ह 10 बजे उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे अन्यथा उक्त तिथि के अवसान पर किसी की कोई आपत्ति नहीं सुनी जायेगी और प्रार्थना पत्र पर यथोचित आदेश पारित कर दिया जायेगा।

आज दिनांक माह सन ई0 को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित जारी किया गया।

द0 हाकिम

सीएम योगी ने गोरखपुर में गिनाई उपलब्धियां, बोले– 70 साल पर आठ साल भारी

संवाददाता–गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जिस उत्तर प्रदेश को 2017 के पहले तक बीमारू और देश के विकास में बैरियर माना जाता था, वही प्रदेश आठ साल की विकास यात्रा में देश मे हर क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। 2017 के पहले जहां उत्तर प्रदेश को देश का फिसड्डी राज्य समझा जाता था, वहीं 2017 के बाद यह प्रदेश केंद्र सरकार की 45 से अधिक योजनाओं में या तो नम्बर एक है या अग्रणी।

सीएम योगी मंगलवार को अपने नेतृत्व वाली प्रदेश सरकार के आठ साल पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय (25 से 27 मार्च) 'उत्कर्ष के आठ वर्ष' विकास उत्सव का शुभारंभ करने के बाद जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

गोरखपुर के महंत दिग्विजयनाथ पार्क में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से 25 करोड़ प्रदेशवासियों की सेवा, सुरक्षा और सुशासन के आठ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसके लिए यूपी की जनता को बधाई जिसके सहयोग और समर्थन से यह राज्य नए भारत के नए उत्तर प्रदेश के रूप में अपनी चमक बिखेर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भी प्रदेश वही है, तंत्र भी वही है। पर, जब 2017 में सत्ता बदली तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार आते ही इस राज्य में विकास के सभी बैरियर समाप्त हो गए। पहले यूपी में अन्नदाता किसान आत्महत्या करने को मजबूर था, युवाओं के सामने पहचान का संकट था, गरीब भुखमरी की चपेट में था, बेटियों और व्यापारियों की सुरक्षा पर संकट था।

जबकि आज डबल इंजन सरकार की योजनाओं से किसान आत्मनिर्भर है, महिलाएं सशक्त हैं, युवाओं को रोजगार मिल रहा है, गरीब खुशहाल हुआ है। विकास के साथ यूपी की सुरक्षा व्यवस्था देश में नजीर बनी हुई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यूपी में बदलाव की यह यात्रा आसान नहीं थी। तबकी परिस्थिति बेहद कठिन थी। पहले प्रदेश में दंगे होते थे, हर जिले में एक माफिया का राज चलता था, जमीन पर कब्जा, अवैध खनन, पशु तस्करी, बेटी एवं व्यापारी पर खतरा जैसी परिस्थितियां थी। 2017 में आई सरकार ने माफिया को समाप्त किया। आज सरकार ने गरीबी उन्मूलन, रोजगार आदि भारी भरकम योजनाओं को धरातल पर उतार करके प्रत्येक क्षेत्र में प्रदेश को अग्रणी बनाने का कार्य किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश के उत्कर्ष के आठ वर्ष पूर्ण हुए हैं। प्रदेश में हर क्षेत्र में विकास हुआ है। युवा सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण व्यापार सुरक्षा विरासत संरक्षण का कार्य इन आठ वर्षो में तेजी से बढ़ा है। इन आठ की वर्षो की तुलना 2017 से पहले 70 वर्ष तक किये गये कार्यो से किया जाये तो यह आठ वर्ष भारी पड़ते हैं।

प्रदेश की इस विकास यात्रा में प्रदेश वासियों ने डबल इंजन की सरकार का सदैव साथ दिया है। इसमें प्रधानमंत्री जी का मार्ग दर्शन एवं जनता का अर्शीवाद था। इन कार्यो के परिणामस्वरुप जो यूपी पहले देश का बीमारू राज्य था, आज वह देश का ग्रोथ इंजन बन गया है।

जो यूपी पहले देश के विकास का बैरियर माना जाता था वह आज विकास का ब्रेक थ्रू बना है। यह उपलब्धि प्रदेश ने अपनी युवा शक्ति, श्रमिक शक्ति एवं किसानों के कठिन परिश्रम के बल पर प्राप्त किया है। इसने प्रदेश को देश में नम्बर दो की अर्थव्यवस्था बनाने में योगदान दिया है।

सीएम योगी ने कहा कि पूर्व की सरकार में जहां एक जिला–एक माफिया का बोलबाला था वहीं उनकी सरकार ने एक जिला–एक उत्पाद (ओडीओपी) और एक जिला–एक मेडिकल कॉलेज जैसी योजनाओं से प्रदेश को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाया। इन योजनाओं से प्रदेश में व्यापक परिवर्तन हुआ है। उन्होंने कहा कि 2017 के पूर्व प्रदेश में जहां निवेश नहीं आता था, वहीं अब यह निवेश के लिहाज से देश का सर्वोत्तम गंतव्य बन गया है। यहां का पर्यटन क्षेत्र देश का सबसे अच्छा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले उत्तर प्रदेश में अच्छी सड़कें ही नहीं थीं। आज यूपी देश में सबसे अधिक एक्सप्रेसवे, सबसे बेहतरीन रेल और एयर कनेक्टिविटी वाला, सबसे ज्यादा मेट्रो वाला राज्य बन गया है। आज उत्तर प्रदेश खाद्यान्न उत्पादन, आलू उत्पादन, गन्ना और एथेनाल उत्पादन में नम्बर वन है। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश में बदलाव टीमवर्क, जनता के सहयोग, प्रशासनिक अधिकारियों से कार्य कराने की इच्छाशक्ति के बदौलत संभव हुआ है। परिश्रम की पराकाष्ठा को लगातार बढ़ाकर सभी के सहयोग के साथ यह कार्य बढ़ाया जा रहा है।

विकास के लिए सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि आज बेहतरीन कार्यो के परिणाम स्वरूप नये भारत के एक नये उत्तर प्रदेश का निर्माण हुआ है। आज नये उत्तर प्रदेश में नये गोरखपुर भी सबके सामने है। उन्होंने कहा कि गोरखपुर की विकास यात्रा सबने देखी है। 2017 से पूर्व फर्टिलाइजर बंद था। आज वह प्रारम्भ हो चुका है। वहां एसएसबी का एक कार्यालय, सैनिक स्कूल, एवं केन्द्रीय विद्यालय भी संचालित है। एक ही परिसर में चार कार्यालय संचालित हो रहे है। सीएम ने कहा कि कहा कि गोरखपुर में चार विश्वविद्यालय है। 2017 से पूर्व केवल दो विश्वविद्यालय थ। पांचवे विश्वविद्यालय, फॉरेस्ट्री यूनिवर्सिटी का भी निर्माण होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि गोरखपुर में सड़कों की कनेक्टविटी बहुत अच्छी हुई है। गोरखपुर से लखनऊ, वाराणसी, कुशीनगर, सोनौली, देवरिया जाने वाले सभी मार्ग आज फोरलेन बन चुके है। गोरखपुर शहर में भी सड़को का जाल बिछाया गया है। 2017 से पूर्व एयरपोर्ट से मेडिकल कॉलेज या गोरखनाथ मंदिर जाने के लिए एक घण्टे से भी ज्यादा समय लगता था। आज फोरलेन की सड़कों के कारण यह दूरी दस मिनट में पूरी हो जाती है। स्पोर्टस कालेज, जेल बाईपास के मार्ग भी फोरलेन हो चुके है। हार्बट बांध एवं माधोपुर बांध के भी चौड़ीकरण की कार्यवाही चल रही है। पाण्डेयहाता से आर्यनगर होते हुए धर्मशाला बाजार तक विरासत गलियारा का निर्माण कार्य भी युद्ध स्तर पर चल रहा है। गोरखनाथ मंदिर से हडहवा फाटक होते हुए एचएन सिंह चौराहा तक मंदिर मार्ग का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज शहर हो या गांव, गोरखपुर में सभी मार्ग फोरलेन या टूलेन हो चुके है। हजारो करोड़ों के रूपये की लागत से ओवरब्रिज, फ्लाईओवर का निर्माण किया जा रहा है। राजघाट के पास नये पुल बन रहे है। गोरखनाथ फ्लाईओवर के पास एक और फ्लाईओवर बन रहा है। अब नेपाल से लखनऊ जाने वाले लोगों को शहर में आने की जरूरत नही पड़ती है। अब वह जंगल कौड़िया से सीधे कालेसर होते हुए चले जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि गोरखपुर में ढेर सारे कार्य किये गये है। सहजनवा में अटल आवासीय विद्यालय बना है। प्रदेश का पहला आयुष विश्वविद्यालय भटहट में बनकर तैयार हो चुका है। गोरखपुर जनपद में एक लाख से अधिक लोगो को आवास योजना का लाभ मिल चुका है। प्रदेश में 56 लाख गरीबों को आवास की सुविधा का लाभ दिया गया। प्रदेश के 15 करोड़ लोग फ्री में राशन, एक करोड़ से अधिक लोगों को 12 हजार सालाना की दर से वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित पेंशन, दिव्यांग पेंशन का लाभ, 22 लाख बेटियों को मुख्यमंत्री सुमंगला योजना का लाभ, पौने पांच लाख बेटियों को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में लाभ दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सामूहिक विवाह योजना में में एक अप्रैल के बाद एक लाख रुपये का अनुदान प्रदेश सरकार देने जा रही है। सीएम योगी ने कहा कि कला के संरक्षण और कलाकारों के सम्मान हेतु प्रदेश में एक फिल्म सिटी का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि समाज की जीवंतता के लिए कला बहुत लाभदायक है। कला को संरक्षण एवं कलाकार को प्रोत्साहन की जरूरत होती है।

शुभ मुहूर्त पर होगी राम दरबार की स्थापना, पास लेकर मिलेंगे दर्शन, 800 श्रद्धालुओं को मिलेगी एंट्री

संवाददाता–अयोध्या। मंगलवार को राम मंदिर भवन निर्माण समिति की बैठक में निर्माण कार्यों की समीक्षा हुई। समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने बताया कि प्रथम तल पर राम दरबार की स्थापना होनी है। मई माह के शुरुआती 15 दिन के अंदर शुभ मुहूर्त में राम दरबार स्थापित हो जाएगा। राम दरबार के दर्शन के लिए पास की व्यवस्था होगी। उन्होंने बताया कि एक घंटे में 50 लोगों को राम दरबार में दर्शन का पास जारी किया जाएगा। लगभग 800 लोग राम दरबार का प्रतिदिन दर्शन कर सकेंगे। अंतरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय में 20 गैलरी का निर्माण शुरू हो गया है। भगवान के प्रसंग पर होने वाले प्रसारण में गैलरी की स्क्रिप्ट पर समीक्षा हुई है। राम मंदिर में चलने वाले सभी कार्य दिसंबर 2025 तक पूरे हो जाएंगे।

ऑडिटोरियम का काम 2025 के बाद पूरा होगा। बैठक में रामलला के सूर्य तिलक को लेकर भी चर्चा हुई है। रामनवमी पर भगवान सूर्य स्थायी तौर पर रामलला का सूर्य तिलक करेंगे। आगामी 20 वर्षों तक भगवान रामलला के राम जन्मोत्सव पर भगवान सूर्य तिलक करेंगे। तिलक का कार्यक्रम देश और विदेश में लाइव प्रसारित किया जाएगा। राम मंदिर के चारों द्वार का काम शुरू हो गया है।

नृपेंद्र मिश्र ने बताया कि रामनवमी के मौके पर चंपत राय द्वार के नाम की घोषणा कर सकते हैं। राम मंदिर आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महापुरुषों के नाम पर राम मंदिर के चारों द्वारों का नाम होगा। अप्रैल के अंत में कैनोपी बनाई जा सकेगी। आवश्यकता पड़ने पर रामनवमी के समय कैनोपी और मैट की अस्थाई तौर पर राम मंदिर ट्रस्ट व्यवस्था करेगा।

राष्ट्रीय ग्रामीण बैंक बनाने की मांग

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सांसद जगदंबिका पाल ने संसद में ग्रामीण बैंकों की स्थिति पर चर्चा की। उन्होंने धारा 377 के तहत यह मुद्दा उठाया। देश के 26 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में ग्रामीण बैंक सक्रिय हैं। इन बैंकों की 22,000 से ज्यादा शाखाएं हैं।

ये शाखाएं करीब 40 करोड़ ग्रामीण नागरिकों की आर्थिक जरूरतें पूरी कर रही हैं। सांसद पाल ने भारतीय राष्ट्रीय ग्रामीण बैंक (छत्ठप्) की स्थापना की मांग रखी। उन्होंने नई भर्तियों और प्रमोशन की प्रक्रिया को तेज करने पर जोर दिया। साथ ही अस्थायी कर्मचारियों को स्थायी करने की मांग भी की।

सांसद का कहना है कि ग्रामीण बैंक ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि इन बैंकों को एक केंद्रीय प्राधिकरण के अधीन लाया जाए। इससे बैंकों का संचालन बेहतर होगा। यह कदम ग्रामीण विकास को गति देगा। इससे कर्मचारियों की स्थिति में भी सुधार आएगा।

अप्रैल तक शुरू हो जाएगा नवनिर्मित अग्निशमन केंद्र, डीजी फायर ने किया निरीक्षण

संवाददाता–गोरखपुर। महानिदेशक फायर आदित्य मिश्र ने मंगलवार को चौरीचौरा में देवीपुर के पास नवनिर्मित फायर स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने कर्मचारियों के लिए बनाए गए टाइप ए और टाइप बी के आवासों, बिजली, पानी, स्टोर रूम, भवन, शौचालय व अन्य आवश्यक संशाधनों का भी निरीक्षण किया। सीएफओ जसबीर सिंह को 15 दिन के भीतर फायर स्टेशन को क्रियाशील करने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि जिले में नए फायर स्टेशन बनाए गए हैं, उन्हें क्रियाशील बनाया जा रहा है। कैम्पियरगंज में भूमि विवाद के कारण निर्माण कार्य लंबित है। उसे भी शीघ्र शुरू करवा दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि चौरीचौरा के स्टेशन के भवन व अन्य सुविधाओं का निरीक्षण किया गया है। सभी कार्य पूरा कर लिया गया है। अप्रैल के प्रथम सप्ताह में फसल कटने के साथ ही स्टेशन भी क्रियाशील हो जाएगा। उनके निरीक्षण के दौरान चीफ फायर ऑफिसर जसबीर सिंह, बी बनर्जी, अरुण कुमार, पुलिस आवास निर्माण कार्य के कार्यदायी संस्था के सहायक अभियंता रामप्रकाश शुक्ल आदि उपस्थित रहे।

ट्रेलर की चपेट में आकर बाइक सवार मौसेरे भाइयों की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। चिलुआताल थाना क्षेत्र के मजनू चौकी अंतर्गत कालेसर–जंगल कौड़िया फोरलेन पर ट्रेलर ने बाइक सवार दो युवकों को टक्कर मार दी। इसमें दो मौसेरे भाइयों की मौत हो गई। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार सुबह लगभग आठ बजे के आस पास स्थानीय थाना क्षेत्र के मजनू चौकी अंतर्गत कालेसर–जंगल कौड़िया फोरलेन पर कुशहरा गांव के सामने बाइक से जा रहे दो युवकों को ट्रेलर ने टक्कर मार दी। दोनों युवक ट्रेलर के नीचे आ गए और मौके पर ही दोनों की मौत हो गई। ट्रेलर को ड्राइवर ने शेरपुर चमराह टोल प्लाजा पर खड़ा कर फरार हो गया। मृतकों की पहचान साहिल पुत्र इलियास (18) निवासी ग्राम भिटनी थाना चिलुआताल व अरबाज खान पुत्र खुर्शीद अहमद (19) निवासी गेहूआसागर (कजाकपुर) थाना रामगढ़ताल गोरखपुर के रूप में हुई। मृतक के परिजनों ने बताया कि दिनों मौसेरे भाई थे और भिटनी से अपने मौसी के घर बालापर जा रहे थे। वारिश अली पुत्र स्व याकूब अली निवासी ग्राम भिटनी थाना चिलुआताल ने लिखित तहरीर पुलिस को दे दी है।

वीडियो का विरोध पर मनबढ़ ने भाई व चाचा को पीटा

संवाददाता–गोरखपुर। सहजनवा क्षेत्र के भीटीरावत के चकिया टोला निवासी युवती का बगल के गांव का युवक इंस्टाग्राम से फोटो निकालकर वीडियो बना रहा था। जानकारी होने पर भाई ने विरोध किया तो मनबढ़ ने भाई व चाचा को पीटकर घायल कर दिया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। क्षेत्र के चकिया निवासी अमन ने पुलिस को बताया कि बगल के गांव का युवक उसकी बहन की फोटो इंस्टाग्राम से निकालकर वीडियो बना रहा था। जानकारी होने पर उसे समझाया बुझाया गया।

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील
सिविल अपील सं0
अदालत– श्रीमान बन्दोवस्त अधिकारी चकबन्दी बस्ती जिला–बस्ती

मो0 हनीफ
बनाम
अब्दुल हमीद

बनाम– 1. अब्दुल हमी पुत्र मोहम्मद रजा साकिन महूघाट तप्पा रामगढ़ परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 04–04–2025

अपील बनराजी आदेश अदालत च0अ0 मुकाम बस्ती
मयरिखा 26 महीना 06 सन् 2079 ई0 रेस्पान्डेन्ट

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 04 महीना 04 सन 2025 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 22 माह 03 सन 2025 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुदा्अलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान अपर आयुक्त (प्रशासन) बस्ती मण्डल बस्ती जिला–बस्ती
निगरानी सं0–563/2019
C 201917000000563

श्रीमती शान्ती देवी
बनाम
उदयराज

3/1 आकाश यादव 3/2 अमन यादव पुत्रगण धीरेन्द्र प्रकाश 3/3 कु0 अल्का 3/4 कु0 अन्नू पुत्रीगण स्व0 धीरेन्द्र प्रकाश 3/5 शारदा देवी विधवा धीरेन्द्र प्रकाश निवासीगण मौजा कंचनपुर हाल मुकाम विशुनपुर तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 01–04–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 01 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
अदालत–श्रीमान एकादश अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती कोर्ट सं0–24
मूलवाद सं0 516/2006

सूरसती देवी
बनाम
महन्थ आदि

2/1 ज्वाला प्रसाद उम्र 48 साल पुत्र रामकेवल 2/2 परमात्मा प्रसाद उम्र 45 साल पुत्र रामकेवल 2/3 श्रीमती ऊषा देवी पत्नी रामकेवल ग्राम नरायनपुर मिश्र तप्पा पुरैना परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 08–04–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 08 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद महोदय बस्ती जिला–बस्ती
मूलवाद सं0 97/2023

बाबूराम यादव
बनाम
रामदीन आदि

1. रामदीन उम्र लगभग 65 वर्ष पुत्र भग्गल 2. भाईयाराम उम्र लगभग 33 वर्ष 3. भरथराम उम्र लगभग 30 वर्ष पुत्रगण शिव प्रसाद 4. धीरज उम्र लगभग 28 वर्ष 5. नीरज उम्र लगभग 22 वर्ष पुत्रगण रामदीन निवासीगण ग्राम महरीपुर तप्पा दुबखरा परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 26–03–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 26 माह 03 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त मूसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिग्री एकतर्फा
(आर्डर 9 कायदा 13)
अदालत–श्रीमान नवम् अति0 सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
मु0नं0– 630/96
मुतफरिका नं0– 430/2023

जानकी प्रसाद
बनाम
रामगोपाल आदि

1. रामगोपाल आयु लगभग 22 साल पुत्र ढुनमुन 2. धीरज आयु लगभग 35 साल 3. पथरू आयु लगभग 37 साल पुत्रगण फुरसत 4. रामशरन आयु लगभग 35 साल पुत्र बीपत 5. रामसवारे आयु लगभग 35 साल पुत्र शिवलाल 6/1 आरती आयु लगभग 35 साल पुत्री मथुरा साकिनान मौजा पैकोलिया तप्पा रतनपुर परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 28–04–2025

हरगाह मुद्दाअलेह मजकुरूसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिग्री एकतरफा मुवरिखा जो साकिन मजकुरूसदर में साबित हो चुकी है पेश की है। लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस में बतारीख 28 माह 04 सन 2025 या बजरिये वकील अदालत हाजा या बजरिये मुख्तार मजाज हुक्म जाप्ता और वाकिफ हाजा मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) हाजिर करें कि नाममुद्दई की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
मूलवाद सं0 113/2024

रामशंकर आदि
बनाम
ओम प्रकाश आदि

5. लालजी उम्र लगभग 52 साल 6. रामजी उम्र लगभग 50 साल पुत्रगण रामबचन साकिनान अवस्थीपुर तप्पा गनेशपुर परगना नगर पूरव तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 01–04–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 01 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
वाद सं0–
धारा 34 उ0प्र0रा0सं0–2006
अदालत– श्रीमान नायब तहसीलदार हर्रैया जिला–बस्ती

रकीबुन्निशा
बनाम
अंसार अहमद
साकिन निदुरीखम्हौवा

1. सवीहुर्रहमान पुत्र नियाज अहमद साकिन वकसांवा पो0 कोठी जिला बाराबंकी 2. हफीजुर्रहमान पुत्र नियाज अहमद साकिन वकसांवा पो0 कोठी जिला बाराबंकी

तारीख पेशी 04–04–2025

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 04 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैस़ला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 24 माह 03 सन 2025 ई0 जारी किया गया। द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश
(आर्डर 9 कायदा 9) (2)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद 143/2024
मूलवाद सं0–157/2018

दीपक कुमार शुक्ला
बनाम
उर्मिला एजूकेशनल एकेडमी आदि

1. उर्मिला एजूकेशनल एकेडमी खजुरिया द्वारा प्रबन्धक दिलीप कुमार शुक्ल पुत्र वीरेन्द्र कुमार शुक्ला निवासी मौजा खजुरिया तप्पा पड़िया परगना बस्ती पूरव तहसील रूधौली जिला–बस्ती
2. श्रीमती सुमन शुक्ला पत्नी दिलीप कुमार शुक्ल निवासी मौजा खजुरिया तप्पा पड़िया परगना बस्ती पूरव तहसील रूधौली जिला–बस्ती

तारीख पेशी 01–04–2025

हरगाह मुद्दई मजकुरूसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश को है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 01 माह 04 सन 2025 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुर्दा की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

प्रेस विज्ञप्ति

प्रधान मण्डी स्थल अमौली बस्ती (खाद्यान्न) मे रिक्त दुकानो के आवंटन / नीलामी की संसोधित सूचना ।

नवीन मण्डी स्थल अमौली बस्ती में खद्यान्न की 'अ' श्रेणी की 14 दुकाने 'ब' श्रेणी की 05 एवं 'स' श्रेणी की 08 दुकाने कुल 27 नग दुकानो का आवंटन, आवंटन समिति के उपस्थिति में खुली नीलामी द्वारा दिनाँक 27.03.2025 को समय दोपहर 1:00 बजे कलेक्ट्रेट सभागार बस्ती मे उपनिदेशक (प्रशा०/विप०) महोदया की अध्यक्षता में किया जाना था जो अपरिहार्य कारणो से स्थगित कर दिया गया है। दुकान आवंटन प्रक्रिया पूर्व निर्धारित शर्तों के अनुसार दिनाँक 29.03. 2025 को पूर्व निर्धारित समय व स्थान पर सम्पन्न करायी जायेगी। इच्छुक व्यक्ति दिनाँक 26.03.2025 तक सांय 05 बजे को कार्यालय से आवेदन पत्र प्राप्त कर दिनाँक 27.03.2025 को सांय 05 बजे तक कार्यालय मे जमा किया जा सकता है। अपूर्ण अवेदन पत्र पर विचार नही किया जायेगा।

(महेन्द्र कुमार गुप्त)
सचिव

(प्रतिपाल सिंह चौहान)
अपर जिलाधिकारी (वि०/रा०)/
सभापति

कार्यालय कृषि उत्पादन मण्डी समिति, बस्ती।

पत्रांकः–कृ०उ०म०स०ब०/ दु०आ०/2025–569 दिनांक–24–3–25

दैनिक
भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट
अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेल**bhartiyabasti@yahoo.com**
bhartiyabasti@gmail.com